ओ३म्

आदिम सत्यार्थ प्रकाश के महत्वपूर्ण संस्मरण

तथा

आर्य समाज स्थापना का प्रामाणिक दस्तावेज

[लेखक श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ]

(सर्वाधिकार लेखक के आधीन हैं)

कल्प वत्सर	१९७३८१३०७४
मानव वत्सर	१९६०८५३०७४
वेद वत्सर	१९६०८५३०६९
कलिवत्सर	५०७५
विक्रम सम्वत	२०३१
शाके	१८९६

तिथि ... सं० ५२ ...

प्रकाशक:—आर्ष योग विद्यापीठ, आनन्द निकेतन ... ...
खरखौदा, मेरठ, [उत्तर प्रदेश]
भेंट २ रुपया ५० पैं

कृपया भेंट देकर ही पुस्तक लें।

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर ....
पु. परिग्रहण क्रमांक 511

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 511
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

आदिम सत्यार्थ प्रकाश के महत्वपूर्ण संस्मरण तथा

आर्य समाज स्थापना का प्रामाणिक दस्तावेज

[लेखक श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ]

(सर्वाधिकार लेखक के आधीन हैं)

कल्प वत्सर	१९७३८१३०७४
मानव वत्सर	१९६०८५३०७४
वेद वत्सर	१९६०८५३०६९
कलिवत्सर	५०७५
विक्रम सम्वत	२०३१
शाके	१८९६

प्रकाशकः—आर्य योग विद्यापी०, आनन्द निकेतन
खरखौदा, मेरठ, [उत्तर प्रदेश]

भेंट २ रुपया ५० पै०

कृपया भेंट देकर ही पुस्तक लें।

* ओ३म् *

॥ सर्व शक्तिमते जगदीश्वराय नमः ॥

—: भूमिका :—

सत्यार्थ प्रकाश सर्वप्रथम १८७५ ईसवी में बनारस से प्रकाशित हुआ था। वाग्मि प्रवर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इसे लिखा था। तत्कालीन डिप्टी कलक्टर, श्री राजा जयकृष्ण दास जी ने इसे प्रकाशित कराया था। इसमें उस समय बारह समुल्लास ही प्रकाशित हुये थे परन्तु इसमें चौदह समुल्लासों का उल्लेख था। सम्वत् १९३१ विक्रमी में प्रकाशित यह सत्यार्थ प्रकाश अपने समय का अद्भुत ग्रन्थ है। सन् १८८४ ईसवी तदनुसार सम्वत् १९४० विक्रमी में सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण वैदिक यंत्रालय प्रयाग से मुन्शी समर्थदान द्वारा प्रकाशित हुआ। कतिपय कारणों से श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के १८७५ ईसवी में प्रकाशित हुए संस्करण के स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित

संस्करण लिखा। इसमें चौदह समुल्लास थे तथा जो १८८४ ईसवी में प्रयाग से प्रकाशित हुआ। सत्यार्थ प्रकाश का यही संस्करण आर्य समाजों में प्रचलित है।

सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण अत्यन्त महत्व-पूर्ण है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने पत्र "सद्धर्म प्रचारक" में इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण के महत्वपूर्ण स्थलों का संकलन मैंने "आदिम सत्यार्थ प्रकाश के महत्व-पूर्ण संस्मरण" के नाम से लिखा है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण १८७५ ईसवी में प्रकाशित हुआ था तथा आर्य-समाज की स्थापना भी ७ मार्च १८७५ ईसवी तदनुसार रविवार माघ कृष्ण अमावस्या सम्वत् १९३१ विक्रमी (दक्षिण भारत) तदनुसार फाल्गुण कृष्ण अमावस्या १९३१ विक्रमी (उत्तर भारत) तदनुसार २५ फाल्गुण १९३१ विक्रमी, शाके १७९६, फसली १२८२ को आर्य समाज काकड़ वाड़ी बम्बई के "पञ्जीकरण पत्रक" के (जो तत्का-लीन पञ्जीकरण अधिकारी "ए० त्रयम्बक" पञ्जीकरण कार्यालय बम्बई द्वारा १३ अप्रैल १८८८ ईसवी को पञ्जीकृत हुआ) अनुसार हुई। आज भी उस पञ्जीकरण पत्रक की प्रतिलिपि मेरे पास उपलब्ध है। विक्रम सम्वत् २०३१ आर्य समाज का ही नहीं, सत्यार्थ प्रकाश का भी

शताब्दी वर्ष है। इस दृष्टि से सम्वत २०३१ विक्रमी आर्य समाज के इतिहास में एक गौरव पूर्ण वर्ष है। इस संकलन के अन्त में मैं आर्य समाज बम्बई का "पञ्जीकृत पत्रक" भी आर्य समाज स्थापना के "प्रामाणिक पत्रक" के रूप में संलग्न कर रहा हूँ, । जिसके अनुसार आर्य समाज की स्थापना पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में ७ मार्च १८७५ ईसवी को बम्बई में हुई।

इस पुस्तक में मैंने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण के प्रथम पृष्ठ को प्रथम संस्करण के अनुरूप ही रक्खा है तथा प्रथम संस्करण के पहिचानने हेतु, पृष्ठों के अनुसार मुद्रित विवरण भी संक्षेप में लिखा है।

परम पिता परमात्मा की परम कृपा के फल स्वरूप मैं इसे लिख सका हूं । आशा है यह महत्वपूर्ण संकलन प्रभु कृपा से जन-मानस का मार्ग निर्देशन करेगा।

स्वामी आत्मानन्द तीर्थ
आचार्य
आर्य योग विद्यापीठ, खरखौदा
मेरठ, उत्तर प्रदेश

बुद्धवार, फाल्गुण
कृष्ण अमावस्या
२०३१ विक्रमी
२६ फाल्गुण २०३१ विक्रमी
शाके १८९६

(सर्वाधिकार लेखक के आधीन हैं)

पृष्ठ — विषय सूची

पृष्ठ	विषय
१	भूमिका
४	विषय सूची।
६	सत्यार्थ प्रकाश के १८७५ ईसवी में प्रकाशित प्रथम संस्करण के मुख पृष्ठ की प्रतिलिपि।
११—१२	सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण के पृष्ठों के विषयों का संक्षिप्त विवरण (प्रथम संस्करण को ठीक से पहिचानने के लिये।)
१३—१४	छल कपट और कृतघ्न की व्याख्या, माता पिता का सन्तान के प्रति कर्त्तव्य, आचमन विधि।
१४	प्राणायाम विधि।
१५	द्विजों का यज्ञोपवीत, यज्ञकुण्ड, पिता द्वारा गायत्री उपदेश।
१६	यज्ञ सामग्री का विवरण, वायु का स्तर वर्णन।
१६	मृतक तर्पण श्राद्ध निषेध, देव, ऋषि संज्ञा व्याख्या।
१७	स्वधा व्याख्या।
१७	विवाह की आयु।
	दान व्यवस्था, कामना की आवश्यकता तथा अत्यन्त कामना वाला होने का निषेध।
१८	आप्त और म्लेच्छ व्याख्या।
१९	प्रमाण वर्णन, शास्त्र अध्ययन की व्याख्या।
१९	पूर्व काल में विमान, विद्या और बल की उन्नति।
२०	श्रोत्रिय व्याख्या, विवाह योग्य स्त्री।
२०—२१	व्यभिचार निषेध, दिनचर्या।
२२	संध्या काल वर्णन, जीवात्मा का शरीर में निवास।
२२—२४	संध्या न करने पर दण्ड, उपासना की व्याख्या व्यायाम।
२५	चापलूसी का निषेध, द्विजों में पुनर्विवाह निषेध,

२५ बालकों के साथ अनाचार करने की निंदा।
२६ मूर्खों के यज्ञोपवीत उतारने की व्यवस्था
२६—२७ विधवा विवाह, परदा निषेध।
२८ तप की आवश्यकता।
२८ संन्यास की योग्यता।
२९—३० संन्यासी की भिक्षा व्यवस्था तथा आचार वर्णन।
३१ साक्षी विवरण, शूद्र द्वारा पाक व्यवस्था।
३२ ३३ प्राणादि व्याख्या, अवस्थाओं तथा शरीरों की व्याख्या।
३३ योग सिद्धि का वर्णन, वेदाविर्भाव वर्णन।
३४ व्यास शब्द की व्याख्या, संस्कृत भाषा।
३५ - ३६ भूत प्रेत निषेध, अपभ्रंश व्याख्या, परमाणु व्याख्या, वायु व्यवस्था वर्णन, जन्म मरण वर्णन।
३७ शरीर की अवस्था वर्णन, स्वर्ग नरक वर्णन, जीवात्मा के आवागमन का आधार।
३८—३९ सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था का वर्णन। वृक्षादि में जीवात्मा, ऋषि देवादि व्याख्या
४० ४१ ब्रह्मा आदि की व्याख्या, मोक्षावस्था तथा प्रलयावस्था वर्णन, मुक्ति कितने जन्मों में होती है।
४१ अस्पृश्यता निषेध, भक्ष्याभक्ष्य वर्णन।
४२ भक्ष्याभक्ष्य में पाप पुण्य व्यवस्था।
४३ गो आदि पशुओं की रक्षा।
४४ पाक व्यवस्था में शूद्र का अधिकार।
४४—४५ भोजन में पाखण्ड, नशा निषेध, सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में चौदह समुल्लास होने का प्रमाण, अन्य भाषाओं की संस्कृत से उत्पत्ति अंग्रेजों द्वारा पूर्वकाल में भारत की उन्नति का वर्णन।
४६ शङ्कराचार्य का वर्णन।

४७ राजा भोज द्वारा संजीवनी इतिहास ग्रन्थ का वर्णन।
४८ महमूद गजववी के आक्रमण का विवरण।
४८ चार ब्राह्मणों द्वारा भारत की उन्नति का यत्न
४६ तथा चौहान आदि की उत्पत्ति।
४६ मुहम्मद गौरी का आक्रमण।
५० औरंगजेब का अत्याचार, जैन तथा मुसलमानों द्वारा देश की हानि, अंगरेजों द्वारा चित्रकूट के पुस्तकालय का जलाने का विवरण।
५१ अन्य भाषाओं के पढ़ने का परामर्श, युधिष्ठिरादिक को अन्य भाषा ज्ञान।
५२ पण्डित शब्द व्याख्या।
५३ संन्यासियों की "शङ्कर दिग्विजय"
५३ पुस्तक तथा अन्य सम्प्रदाय के लोगों की अन्य "माधव दिग्विजय" पुस्तकों का खण्डन, संन्यासियों के दश नाम का खण्डन।
५३ दण्डी संन्यासियों के मठ एवम् दण्ड व्यवस्था का खण्डन, दण्डियों को ही प्राचीन सन्यासी मानना, संन्यास के समय पूर्व नाम परिवर्त्तन का निषेध।
५४ श्री कृष्ण जी की महत्ता, हिमालय में "महाभारत"
५४ के प्रमाण से ब्रह्मादिक का' निवास, सर्गारम्भ में हिमालय में मानवोत्पत्ति।
५५ महादेव आदिक गुणवाचक नाम, देव तथा दैत्य गुरु वर्णन।
५६ रसायन मिथ्यात्व, अंगरेजों का राज्य सुप्रबन्ध,
५७ आजीविका की व्यवस्था। नमक पर कर निषेध मद्यादि पर कर का लगाना आवश्यक।

५७ व्यभिचार पर कठोर दण्ड व्यवस्था ।
५८ दण्ड व्यवस्था कठोर होना ।
५६ व्यभिचार पर कठोर दण्ड व्यवस्था ।
६२ न्यायालय में कागज पर कर का निषेध ।
६२ मिथ्या साक्षी पर कठोर दण्ड, न्यायाधीश को कर्त्तव्य में प्रमाद पर दण्ड ।
६३ राजा की योग्यता के आधार पर सुख प्राप्ति ।
६४ पुलिस कर्मियों में श्रेष्ठ व्यक्तियों को ही रखना चाहिये
६४ पुलिस में सूचना का महत्व; पुलिस की अव्यवस्था की निन्दा, गो आदि पशुओं के वध से हानि तथा पशु रक्षण से लाभ ।
६४ पशुवध निषेध, सुखकर राज्य व्यवस्था ।
६८ राजा सगर का इतिहास तथा राजा सगर द्वारा अपने पुत्र असमंजा को अपराध करने पर कठोर दण्ड ।
६८ भर्त राजा द्वारा अपने अयोग्य पुत्रों का वध ।
६६ संतान को उत्तम रखने हेतु कठोर दण्ड का उपदेश ।
७० आर्यावर्त की दुर्दशा का कारण मतमतान्तर ।
७० अंगरेजी राज्य की सुव्यवस्था पश्चाताप व्याख्या, वर्णाश्रम व्यवस्था का महत्व यज्ञोपवीत विद्या का चिह्न।
७१ जाति व्याख्या, वर्तमान जाति व्यवस्था का खण्डन, वर्णाश्रम का महत्व, वार्षिकोत्सव निषेध, केवल मात्र अंगरेजी पढ़ने से हानि ।
७२ संस्कृत तथा वेदादिक पढ़ने की अनिवार्य आवश्यकता ।
७३ आर्य समाज की स्थापना विषयक अधिकृत विधि पत्र (अंगरेजी में)

अथ सत्यार्थ प्रकाश

श्री राजा जयकृष्णदास बहादुर
सी. एस. आई.

की

आज्ञाऽनुसार

मुनशी हरिवंशलाल के अधिकार से इस्टार
प्रेस महल्ला रामापूर में छापी गई।
सन् १८७५ ई०।
बनारस

पहली बार १००० पुस्तकें, मोल फी पुस्तक ३)

सन् १८७५ ईसवी में बनारस से प्रकाशित
सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण को
पहिचानने हेतु उसके पृष्ठों
का संक्षिप्त विवरण :—

१. सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में सर्वप्रथम नाम का पृष्ठ है। दो पृष्ठ सूची पत्र के हैं। चार पृष्ठ शुद्धि पत्र के हैं। चार सौ सात पृष्ठ प्रथम समुल्लास से बारहवें समुल्लास तक हैं। कुल चार सौ पन्द्रह पृष्ठ दोनों तरफ से हैं। बारह समुल्लास हैं।

२. सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में मुख पृष्ठ के पृष्ठ भाग में राजा जयकृष्ण दास के क्रमशः तीन पृथक-पृथक निवेदन हैं।

३. प्रथम तथा द्वितीय पृष्ठ में सूची पत्र है।

४. पृष्ठ एक से चार पृष्ठ पर्यन्त शुद्धि पत्र हैं।

५. पृष्ठ एक से छब्बीस पृष्ठ पर्यन्त प्रथम समुल्लास है।

६. छब्बीस पृष्ठ से छत्तीस पृष्ठ पर्यन्त द्वितीय समुल्लास है।

७. छत्तीस पृष्ठ से तिरानवें पृष्ठ पर्यन्त तृतीय समुल्लास है।

८. चौरानवें पृष्ठ से एक सौ त्रेपन पृष्ठ पर्यन्त चतुर्थ समुल्लास है।

९. एक सौ चौवन पृष्ठ से एक सौ चौहत्तर पृष्ठ पर्यन्त पञ्चम समुल्लास है।

१०. एक सौ चौहत्तर पृष्ठ से दो सौ बीस पृष्ठ पर्यन्त षष्ठ समुल्लास है ।

११. दो सौ इक्कीस पृष्ठ से दो सौ बावन पृष्ठ तक सप्तम् समुल्लास है ।

१२. दो सौ त्रेपन पृष्ट से दो सौ छियासठ पृष्ठ पर्यन्त अष्टम् समुल्लास है ।

१३ दो सौ छियासठ पृष्ठ से दो सौ सत्तानवें पृष्ठ पर्यन्त नवम् समुल्लास है ।

१४. दो सौ अट्ठानवें पृष्ठ से तीन सौ आठ पृष्ठपर्यन्त दशम् समुल्लास है ।

१५. तीन सौ आठ पृष्ठ से तीन सौ छियानवें पृष्ठ पर्यन्त एकादश समुल्लास है ।

१६. तीन सौ छियानवें पृष्ठ से चार सौ पृष्ठ पर्यन्त द्वादश समुल्लास है ।

* ओ३म् *

सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण (१८७५ ई० में मुद्रित) के उद्धरण

१. समुल्लास–२ पृष्ठ ३३

"छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात, बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करे उस उपकार को न मानना कृतघ्नता कहाती है।

२. समुल्लास–३ पृष्ठ ३७

तत् यह तृतीया का एक वचन है।
सवितुः षष्ठी का एक वचन है।
वरेण्यं द्वितीया का एक वचन है।
भर्गः २ का एक वचन है।
देवस्य ६ का एक वचन है।
धीमहि क्रिया पद है।
धियः द्वितीया का बहुवचन है।
यः प्रथमा का एक वचन है।
नः षष्ठी का बहुवचन है।
प्रचोदयात् क्रिया पद है।

३. समुल्लास–२ पृष्ठ ३१

जब तक ब्रह्मचर्य्य की पूर्ति और विवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करें।

४. समुल्लास–३ पृष्ठ ३६

अंगुष्ठ के मूल के नीचे तल नाम हथेली का जो मध्य है उसका नाम ब्राह्म तीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देव तीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृ तीर्थ है आचमन समय में ब्राह्म तीर्थ से आचमन करे।

५. समुल्लास–३ पृष्ट ३८

मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में ले आना, नाभि से अपान को और समान को हृदय में ले आना हृदय में दोनों वे और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर आता है उन सब का नाम प्राण है उसका मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठा ले तब तक वायु न निकाले पीछे हृदय में इकट्ठा करके जैसे कि वमन

में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करे जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहर ही वायु को रोक रक्खै जब चित्त में कुछ कलेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर ले जाय फिर उसको वैसा ही बारम्बार २० बार भी करेगा उसका प्राणवायु स्थिर होजायेगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़ लेगा।

६. समुल्लास–२ पृष्ठ ३६

परन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घर में होना चाहिये पिता यथावत यज्ञोपवीत करे पिता ही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करे।

७. समुल्लास–३ पृष्ठ ४०-४१

एक चतुष्कोण मिट्टी की या तांबे की वेदि रच ले ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे ४ अंगुल रहे।

कुशा को रख ले।

जीव पड़े होंय तो कुशाग्र से निकाल देवै। ऐसे ही

संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्नि होत्र सब करें।

८. समुल्लास–३ पृष्ठ ४५

चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिथो शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी ... और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यक शास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं।

९. समुल्लास–३ पृष्ठ ४६

पृथ्वी के ऊपर ५० क्रोश तक वायु अधिक है इससे ऊपर वायु थोड़ा है।

१०. समुल्लास–३ पृष्ठ ४७

मरे भये पित्रादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है उससे क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये।

११. समुल्लास–३ पृष्ठ ४८

देव ऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है। देव संज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों की ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा। उससे उनको ज्ञान का लाभ होगा।

१२. समुल्लास–३ पृष्ठ ४८-४६

पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि "स्वन्दधातीति स्वधा" अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करे अथवा पोषण करे उसका नाम स्वधा स्वधा।

१३. समुल्लास–३ पृष्ठ ५१

१६ वर्ष से न्यून कन्या का विवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का विवाह करै और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का विवाह करै और २५ वष से पहिले पुत्रों का विवाह करै उसको राजा दण्ड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै।

१४. समुल्लास–३ पृष्ठ ५४

दारिद्र होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये।

१५. समुल्लास–३ पृष्ठ ५४

श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं।

१६. समुल्लास–३ पृष्ठ ५६

मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की

इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या को जो होना सो इच्छा ही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्य ही करना चाहिये।

१७. समुल्लास- ३ पृष्ठ ६०

आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत प्रचार होगा।

१८. सब जीवों के कल्याण की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं।

१९. म्लेच्छः नाम निन्दित नहीं है किन्तु म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उसका नाम म्लेच्छ है।

२०. समुल्लास-३ पृष्ठ ६७

ऋषि आर्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय।

२१. समुल्लास-३ पृष्ठ ७५

प्रत्यक्ष अनुमान उपमान (अर्थापत्ति सम्भव अभाव) शब्द (ऐतिह्य)

चार ही प्रमाण मानना ठीक है यह गोतम मुनि का अभिप्राय है।

२२. समुल्लास–३ पृष्ठ ७९

वेदान्त दर्शन को पढ़ें जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़ें जब तक बौधायन और वात्सायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़ें इसको छः मास में पढ़ लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायेगा दो वर्ष के बीच में सब पदार्थ विद्या पुरुष को यथावत् आवेगी।

२३. समुल्लास–३ पृष्ठ ८५

पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथ्वीयान जलयान और आकाशयानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचर वसु राजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरिचरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे जैसे कि आजकल अंगरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं।

२४. समुल्लास–३ पृष्ठ ९१

युक्ति पूर्वक विद्या और बल से ही वीर्य की रक्षा

करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करना ही पशुवत हो जायेगा।

२५. समुल्लास–३ पृष्ठ ६२

श्रोत्रियंच्छन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण पठन हो गया है उसको श्रोत्रिय कहते है।

२६. समुल्लास–४ पृष्ठ १०१

स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का शिर आवै उससे अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न रहेगा और वंशच्छेद भी हो जाये तो आश्चर्य नहीं।

२७. समुल्लास–४ पृष्ठ १०६

रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है।

२८. समुल्लास–४ पृष्ठ ११०

एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इससे एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात् बहुत है एक स्त्री

के साथ भी सर्वथा वीर्य का नाश करना उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जायेंगे इससे विवाहिता उसके साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं।

२६. समुल्लास–४ पृष्ठ १२६

एक प्रहर रात रहै तब सब मनुष्य उठैं उठके प्रथम धर्म का विचार करैं।

३०. समुल्लास–४ पृष्ठ १२७

उठ के मल मूत्रादिक त्याग करैं हस्तपाद का प्रक्षालन करें फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्तधावन करे अथवा खैर के चूर्ण वा सुंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मले और स्नान करे सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करैं एकान्त में जाके सन्ध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करे सूर्योदय के पीछे घर में आके अग्नि होत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिन न चढ़े तब तक दूसरे प्रहर के प्रारम्भ में तर्प्पण बलिवेश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करे।

३१. समुल्लास-४ पृष्ठ १२७-१२८

जब चार या पाँच घड़ी दिन रहे तब सब कार्यो

को छोड़ के भोजन के लिये जावे पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करे तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करैं, भोजन करके फिर भी सन्ध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय सन्ध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्निहोत्र करै जब जब अग्निहोत्र करैं तब तब स्त्री के साथ ही करैं ।

३२. समुल्लास-४ पृष्ठ १२८

निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करे फिर सोवे दो प्रहर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठ के वैसे ही नित्य क्रिया करे सो मध्यरात्रि के मध्य दो प्रहर में जब जब वीर्यदान करैं उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने शय्या में पृथक पृथक जाके सोवें जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोग ही हो जायेंगे क्योंकि उससे बड़ी उष्णता होती है इस लिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्य्य तेज भी बढ़ेगा ।

३३. समुल्लास–४ पृष्ठ १२८

मनु भगवान का वचन प्रमाण है । भोजनं हि गृह स्थानां सायं प्रातर्विधीयते स्नानं मैथुनी स्मृतम् । इसका अर्थ यह है कि दो वेर ग्रहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातःकाल जो मैथुन करैं तो उसके पीछे स्नान अवश्य करैं ।

३४. समुल्लास–४ पृष्ठ १२६

रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करें जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी बहिर्मुख करता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र के ऊपर के अंगों में विहार कर्त्ता है जैसे कि सूर्य उदय होकर ऊपर २ विहार कर्त्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अङ्गों में चला जाता है रात्रि की नांईं अंधकार हो जाता है बिना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नहीं देखता जैसे कि सूर्य अस्त हो जाता है तब अंधकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसे ही जीव ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका संधान दोनों संध्या काल। में करें इसके संधान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है/और जीव का कभी नाश नहीं होता इसका नाम आदित्य है इस श्रुति का अर्थ हो गया अर्थात्‌:—

उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलं भद्रमश्नुते ॥

३५. समुल्लास–४ पृष्ठ १२६

जो प्रातः और सायंकाल की संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल

देवैं अर्थात् यज्ञोपवीत को तोड़के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवा ही करे जो कि शूद्र का कर्म है।

३६. समुल्लास-२ पृष्ठ २८

इतनी शिक्षा बालकों को पांच वर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्य देशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावैं।

३७. समुल्लास-२ पृष्ठ ८२

योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से ले के कैवल्यपर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है।

३८. समुल्लास-३ पृष्ठ ९०-९१

जब सोलह वर्ष का पुरुष होय तबसे ले के जब तक वृद्धावस्था न आवै तब तक ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उसको भोजन से एक घन्टा पीछे भोजन करै परन्तु दूध जो पीना होय अभ्यास के पीछे शीघ्र ही पीवै उससे शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायेगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ हो जाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट हो जाती हैं जठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है

गुरु विरजानन्द दण्डी

अर्थात् सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क और रूक्ष हो जाते हैं उससे बुद्धि भी वैसी ही रूक्ष हो जाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इससे अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है।

३९. समुल्लास–४ पृष्ठ १२०

खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं की और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते।

४०. समुल्लास–४ पृष्ठ ११३

बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनकी तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये।

४१. समुल्लास–४ पृष्ठ १३०

दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः सन्ध्या के काल का नियम है तथा एक आध घड़ी दिन से ले के जब तक तारा न निकलैं तब तक सायं सन्ध्या काल का नियम है।

४२. समुल्लास–४ पृष्ठ १३१

कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी सदा बुद्धि रक्खै।

४३. समुल्लास-४ पृष्ठ १३६

द्विज कुल में दो बार विवाह का होना उचित नहीं।

४४. सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़के शूद्र कुल में करदें।

४५. समुल्लास–४ पृष्ठ १४१

जब कोई विधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा गोत्र और जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो सम्बन्ध से होय उससे विधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से, जब स्त्री पति मर जाये और मरने का शोक भी निवृत्त हो जाये।

४६. समुल्लास–४ पृष्ठ १४५

जो स्त्री अक्षत योनि अर्थात् विवाह तथा जाने आने मात्र व्यवहार तो हुआ हो परन्तु पुरुष से समागम न हुआ होय तो पौनर्भव पुरुष अर्थात् विधवा के नियोग से जो उत्पन्न भया होय उसके साथ विधवा का विवाह ही होना उचित है।

४७. समुल्लास–४ पृष्ठ १५३

जो स्त्रियों को अत्यन्त बन्धन में रखते हैं यह भी बड़ा भ्रष्ट काम है क्यों कि स्त्रियों को बड़ा दुख होता है श्रेष्ठ पुरुषों का तो दर्शन भी नहीं होता और नीच पुरुषों

से भ्रष्ट हो जाती हैं देखना चाहिये कि परमेश्वर ने तो सब जीवों को स्वतंत्र रचे हैं और उनको मनुष्य लोग बिना अपराध से बन्धन में रख देते हैं वे बड़ा पाप कर्म करते हैं सो इस बात को सज्जन लोग कभी न करें यह बात मुसलमानों के राज्य से प्रवृत भई है आगे न थी कौन्ती गांधारी और द्रोपद्यादिक स्त्रियाँ राज्य सभा में जहाँ कि राजा लोगों की सभा होती थी और वार्ता संभाषण करती थीं अपने पति को पंखा और जलादिकों से सेवा भी करती थीं और गार्गी मैत्रेयी इत्यादिक ऋषि लोगों की स्त्रियां भी सभा में शास्त्रार्थ करती थीं यह बात महाभारत और बृहदारण्यक उपनिषद् में लिखी है इसको अवश्य करना चाहिये मुसलमान लोगों का जब राज्य भया था तब जिस किसी की कन्या वा स्त्री को पकड़ लेते और भ्रष्ट कर देते थे उसी दिन से श्रेष्ठ आर्य्यावर्त देशवासी लोग स्त्रियों को घर में रखने लगे सो इस बात को छोड़ ही देना चाहिये क्यों कि इस व्यवहार में सिवाय दुःख के सुख कुछ नहीं जैसे दाक्षिणात्य लोगों की स्त्रियां वस्त्र धारण करती हैं वैसा ही पहिले था क्यों कि कभी वस्त्र अशुद्ध नहीं रहता सब दिन जैसे पुरुषों के वस्त्र शुद्ध रहते हैं इससे इस प्रकार वस्त्र धारण करना उचित है ।

४८. समुल्लास–५ पृष्ठ १५६

बिना तप के अन्तःकरण शुद्ध नहीं होता और इन्द्रियों का जय भी नहीं होता इससे अवश्य तप करना चाहिये ।

४९. जप तप से मन और इन्द्रियां सब वशीभूत हो जाय तब अग्नि आहवनीय, गार्हपत्य, दाक्षिणात्य सभ्य और आवसथ्य यह पाँच प्रकार का अग्नि होता है और वैतान अर्थात् इष्टियों की सामग्री और अग्नि होत्र की सामग्री उनकी बाह्य क्रिया को छोड़ दे क्यों कि जितनी बाह्य क्रिया हैं वे मन की शुद्धि के लिये हैं सो जब मन शुद्ध हो जाय तब उनके करने का कुछ प्रयोजन नहीं किन्तु केवल भीतर की जो क्रिया अर्थात् योगाभ्यास और विचार इन्ही को करै ।

५०. समुल्लास–५ पृष्ठ १५८

जब ससार के व्यवहार और अग्नि होत्रादिक बाह्य क्रिया जिनमें उपवीत निवीति प्राचीनावीति यज्ञोपवीत से क्रिया करनी होती है उन अग्निहोत्र बाह्य क्रियाओं को तो छोड़ दिया और कहीं प्रतिष्ठा विद्या से करानी उसकी नहीं फिर यज्ञोपवीतादिक का रखना उसको व्यर्थ ही है इसमें यह प्रमाण है । प्राजापत्यां निरुप्येष्टि तस्यां सर्ववेदसं हुत्वा ब्राह्मणः प्रव्रजेत ॥ यह यजुर्वेद के

ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि प्राजापत्य इष्टि को करके उसमें सर्ववेद सवेदस विद्लाभे जो जो यज्ञोपवीतादिक बाह्य चिह्न प्राप्त हुये थे उन सभों को हुत्वा नाम त्यक्त्वा अर्थात् छोड़ के ब्राह्मण विद्या ज्ञानवान तथा वैराग्य इत्यादिक गुणवाला 'परिव्रजेत् परितः सर्वतः व्रजेत' सब संसार के बन्धनों से मुक्त हो के सन्यासी हो जाय।

५१. दशेन्द्रियां पाँच प्राणमन बुद्धि चित्त और अहंकार इन १६ सत तत्वों के मिलने से लिंग शरीर कहाता है।

५२. समुल्लास–५ पृष्ठ १६०

ऋणानि त्रीण्ययाकृत्य, मनो मोक्ष निवेशयेत्। अनयाकृत्य मोक्षन्तु सेवामानो व्रजत्यधः ॥२३॥ म तीन ऋण अर्थात्। ऋषि पितृ और देव ऋण इनको करके मोक्ष के वास्ते संन्यास में चित्त प्रविष्ट करे और इन तीनों न करके जो संन्यास की इच्छा करता है सो नीचे गिर पड़ता है उसको मोक्ष नहीं प्राप्त होता।

५३. समुल्लास–५ पृष्ठ १६०

इन तीन ऋणों को उतार के मोक्ष अर्थात् संन्यास करने में चित्त देवें अन्यथा नहीं॥

५४. समुल्लास–५ पृष्ठ १६१

ब्रह्मचर्याश्रम से भी संन्यास लेवे तो भी कुछ दोष नहीं।

५५. समुल्लास–५ पृष्ठ १६३

जिस पुरुष को विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्ण जितेन्द्रियता

होय और विषय भोग की इच्छा न होय उसी को सन्यास लेना उचित है अन्य को नहीं।

५६. सन्यासी किसी पदार्थ से सिवाय परमेश्वर के मोह न करे।

५७. समुल्लास–५ पृष्ठ १६४

केश सिर के सब बाल नख और श्मश्रु और ाढ़ी मोंच्छ इनको कभी न रक्खे।

५८. कुसुंवा रंग से रंगे वस्त्र पहिरैं और गेरू वा मृतिका के रंग नहीं अथवा श्वेत वस्त्र धारण करें।

५९. एक बेर भिक्षा करे अत्यन्त भिक्षा में आसक्त न होय क्योंकि जो भोजन में आसक्त होगा सो विषयों में भी आसक्त होगा।

६०. समुल्लास–५ पृष्ठ १६५

जब गाँव में धूम न दीख पड़ै मूसल वा चक्की का शब्द न सुन पड़ै किसी के घर में अंगार न देख पड़ै सब ग्रहस्थ लोग भोजन कर चुकें और भोजन कर के पत्री और सकोरे बाहर को फेंक देवैं उस समय सन्यासी ग्रहस्थ लोगों के घर में भिक्षा के वास्ते नित्य जांय और जो ऐसा कहते हैं कि हम पहिले ही भिक्षा करेंगे यह उनका पाखण्ड ही जानना, क्योंकि ग्रहस्थ लोगों को पीड़ा होती है।

६१. समुल्लास-५ पृष्ठ १६८

प्राणायामादिक अध्यात्म विद्या जो कोई नहीं जानता उसको सन्यासी ग्रहण का कुछ फल नहीं होता उसका सन्यास ग्रहण ही व्यर्थ है।

६२. समुल्लास-६ पृष्ठ १९३

ब्राह्मण क्षत्रिय वा वैश्यों के दुष्ट पुत्र वा कन्या मूर्ख हो जायें तब उनको शूद्रकुल में रख दें और शूद्रादिकों में जब द्विजत्य अधिकार के योग्य होवें तब यथा योग्य द्विज का अधिकार देवैं अर्थात् द्विज बना देवें तब जिस ब्राह्मण क्षत्रिय वा वैश्य के पुत्र वा कन्या एक दो तीन वा जितने शूद्र हो गये होंय उनके बदले पुत्र वा कन्याओं को राजा गिन२ के देवे तथा शूद्रादिकों को भी।

६३. समुल्लास–६ पृष्ठ २०२

वेदपाठी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी इनको साक्षी करने से पढ़ना पढ़ाना तप और विचार में विघ्न होगा इससे इनको साक्षी न करना चाहिये।

६४. समुल्लास–६ पृष्ठ २१३

रसोई आदिक सेवा सब लोगों की शूद्र ही करैं।

६५. शूद्र ही सब कर देगा और खिलावै पिलावैगा परन्तु ब्राह्मणादिकों के सब पदार्थ सब पात्रादिक होवैं शूद्र के घर के नहीं।

६६. समुल्लास–७ पृष्ठ २३१

प्राण जिससे ऊर्ध्व चेष्टा कर्त्ता है अपान जिससे अधो चेष्टा कर्त्ता है व्यान जिससे जल और अन्न को कण्ठ से भीतर आकर्षण कर लेता है कूर्म जिससे नेत्र को खोलता और मूंदता है कृकल जिससे छींकता है देवदत्त जिससे जम्भाई लेता है धनञ्जय जिससे शरीर को पुष्टि करता है और मरे पीछे शरीर को नहीं छोड़ता जो कि मुरदे को फुलाता है।

६७. समुल्लास–७ पृष्ठ २३२

सब जीवों को ईश्वर ने रचा तब विचार करके स्वतन्त्र ही रख दिये।

६८. समुल्लास–७ पृष्ठ २३३

स्थूल देह बाहर का है और जिसमें गाढ़ निद्रा होती है सत्व रजो और तमोगुण मिलके प्रकृति कहाती है सत्व रजो और तमोगुण मिलके प्रकृति कहाती है जिसका नाम अव्यक्त परम सूक्ष्मभूत और प्रधान भी है वह कारण शरीर कहलाता है सो सब प्राणियों का व्यापक के होने से एक ही है दोनों के बीच में मध्यस्थ लिंग शरीर है चेतन एक जीव और दूसरा परमेश्वर ही है तीसरा कोई नहीं सो परमेश्वर है विभु व्यापक सर्वत्र एक रस जहां २ लिंग शरीर में विशिष्ट जीव रहता है

वहां २ परमेश्वर ही पूर्ण है सो लिंग शरीर में उसका सामान्य प्रकाश है और विशेष प्रकाश चेतन ही का जीव है जैसे दर्पण में सूय का विशेष प्रकाश होता है सो परमेश्वर का सदा संयोग रहता है वियोग कभी नहीं इस्से परमेश्वर के अन्वय होने से वह चेतन नहीं है वह जीव कहलाता है और लिंग देह से परमेश्वर भिन्न होने भिन्न के होने से पृथक भी है क्योंकि लिंग शरीर से युक्त जीव स्वर्ग नर्क जन्म और मरण इत्यादिकों में भ्रमण करता है परन्तु परमेश्वर निश्चल है उसके साथ भ्रमण नहीं करते हैं और उसके गुण दोषों के भोग वा संगी कभी नहीं होते हैं कारण शरीर के ज्ञान लोभ और क्रोधादिक गुण जीव में आते हैं और स्थूल शरीर के शीतोष्ण क्षुधा तृषादिक गुण भी जीव में आते हैं क्योंकि दोनों शरीरों के गुण का भी संग जीव कर्त्ता है।

६९. समुल्लास–७ पृष्ठ २३७

परमेश्वर ने जीव रचे हैं सो केवल धर्माचरण और मुक्त्यादिक सुख के वास्ते रचे हैं और जीव पाप करता है सो अपनी मूर्खता ही से करता है वैसा ही दुःख भोगता है।

७०. समुल्लास–७ पृष्ठ २३८

जीव को यहाँ तक अधिकार दिया है कि अणिमादिक सिद्धि त्रिकाल दर्शन और आप जीव ईश्वर के संयोग से अनन्त सुख को पा सक्ता है।

७१. समुल्लास–७ पृष्ठ २४६

जैसा जगत का संयोग व वियोग होता है वैसा वेद विद्या का संयोग वा वियोग कभी नहीं होता।

७२. समुल्लास–७ पृष्ठ २३६

जगत में सूर्य चन्द्र पृथिव्यादिक भूत वृक्षादिक स्थावर और मनुष्यादिक चर इनका रचन हम लोग देख सके।

७३. समुल्लास–७ पृष्ठ २४२

ईश्वर ने उनको आकाशवाणी की नांई सब शब्द सब मन्त्र उनके स्वर अर्थ और सम्बन्ध भी सुना दिये इस्से वेदों का नाम श्रुति रक्खा है अथवा उनके हृदय में वेदों का प्रकाश कर दिया फिर उन्होंने अन्यों से पर प्रकाश कर दिये।

७४. समुल्लास–७ पृष्ठ २४५

वेद अपौरूषेय और पौरूषेय भी हैं क्योंकि पुरुष देह-धारी जीव का नाम है और पूर्ण के होने से परमेश्वर का भी अपौरूषेय तो इस्से है कि कोई देहधारी जीव का रचना नहीं और पौरूषेय इस वास्ते कि पूर्ण पुरुष जो परमेश्वर उसने रचा है इस्से पौरूषेय भी है।

७५. समुल्लास–७ पृष्ठ २४८

वेदेषु व्यासो विस्तारो नाम विस्तृता बुद्धिर्यस्या स वेद व्यासः॥ व्यास जी॥ ने वेदों को पढ़के और पढ़ाये

हैं जिससे सब जगत में वेद का पठन और पाठन फैल गया और उनकी बुद्धि वेदों में विशाल थी कि यथावत शब्द अर्थ और सम्बन्ध से वेदों को जानते थे इससे इनका नाम वेद व्यास रक्खा गया पहिले इनका नाम कृष्ण-द्वैपायन था।

७६. समुल्लास–७ पृष्ठ २४८

आर्यावर्त देश की प्रथम भाषा संस्कृत थी इसी को मुसलमान लोग जिन्न भाषा कहते हैं।

७७. समुल्लास–७ पृष्ठ २५०

जो देव लोग की भाषा होती तो वे क्यों पढ़ते और पढ़ाते क्योंकि देश भाषा तो व्यवहार से परस्पर आ जाती है इस्से देव लोग की संस्कृत भाषा नहीं और जब ब्रह्मादिकों की भाषा नहीं तो आर्यावर्त देश वालों की कैसे होगी।

७८. जो मुसलमान लोग इसको जिन्न भाषा कहते हैं सो केवल ईर्ष्या में कहते हैं जैसे कि आर्यावर्त देश वासियों का नाम हिन्दू रख दिया सो यह संस्कृत जिन्न भाषा भी नहीं क्यों कि जिन्न तो भूत प्रेतपिशाचों ही का ही नाम है भूत प्रेत और पिशाच होते ही नहीं और जो होते होंगे तो लोक लोकान्तर में होते होंगे यहां नहीं फिर उनकी भाषा यहां कैसे आसकेगी।

७९. सब देश भाषाओं का मूल संस्कृत है क्यों कि

संस्कृत जब बिगड़ती है तब अपभ्रंश कहाता है।

८०. समुल्लास-८ पृष्ठ २५३

परमाणु साठ मिलाके एक अणु रचा दो अणु से एक द्वयणुक और तीन द्वयणुक से एक त्रसरेणु और अनेक त्रसरेणु को मिला के यह जो देख पड़ता है सब जगत इसको रच दिया।

८१. समुल्लास-८ पृष्ठ २५६

वायु ४६ वा ५० कोस तक अधिक है उसके ऊपर थोड़ा है।

८२. समुल्लास-६ पृष्ठ २६१

साठ परमाणु से एक अणु बनता है दो अणु से एक द्वयणुक बनता है सो वायु द्वयणुक है इससे प्रत्यक्ष रूप नहीं देख पड़ता वायु से त्रिगुण स्थूल अग्नि रचा है इससे अग्नि में रूप देख पड़ता है उससे चतुर्गुण जल और जल से पंचगुणा पृथिवी रची है।

८३. समुल्लास-६ पृष्ठ २६३

लिंग शरीर और स्थूल शरीर का संयोग से प्रकट का जो होना उनका नाम जन्म है और लिंग शरीर तथा स्थूल शरीर के वियोग होने से अप्रकट का जो होना उसका नाम मरण है सो इस प्रकार से होता है कि जीव अपने संस्कारों से घूमता हुआ जल वा कोई औषधि में

अथवा वायु में मिलता है फिर जैसा जिसके कर्मों का संस्कार अर्थात् सुख वा दुःख जितना जिसको होना अवश्य है परमेश्वर की आज्ञा के अनुकूल वैसे स्थान और वैसे ही शरीरों में मिल के गर्भ में प्रविष्ट होता है।

८४. छः विकार वाला शरीर है अस्ति नाम शरीर है १-जायते नाम जन्म का होना २-वर्द्धते नाम बढ़ना ३-विपरिणामते नाम स्थूल का होना ४-अपक्षीयते नाम क्षीण होना ५-विनश्यते नाम नष्ट का होना नाम मृत्यु है ६, ए छः विकार शरीर के हैं फिर जब मरण होता है तब स्थूल और लिंग शरीर का वियोग होता है सो स्थूल शरीर से लिंग शरीर निकल के बाहर का जो वायु उसमें मिलता है फिर वायु के साथ जहां तहां घूमता है कभी सूर्य के किरणों के साथ नीचे आता है अथवा वायु के साथ नीचे ऊपर और मध्य में रहता है फिर उक्त प्रकार से शरीर धारण कर लेता है।

८५. समुल्लास–८ पृष्ठ २६४

जिन लोकों में सुख अधिक है और दुःख थोड़ा है उनको स्वर्ग कहते हैं तथा जिन लोकों में दुःख अधिक और सुख थोड़ा है उनको नरक कहते हैं और जिन लोकों में सुख और दुःख तुल्य हैं उनको मर्त्य लोक कहते हैं इस प्रकार के स्वर्ग, मर्त्य और नरक लोक बहुत हैं उनमें

भी अनेक प्रकार के स्थान और पदार्थ हैं कि जिनमें सुख वा दुःख अधिक वा न्यून हैं सो इसी हेतु परमेश्वर ने सब प्रकार के स्थान और पदार्थ रचे हैं कि पापी पुण्यात्मा और मध्यस्थ जीवों को यथावत फल मिले।

८६. समुल्लास–८ पृष्ठ २६५

सो वायु और सूर्य्य के आधार से सब जीवों का जाना और आना होता है।

८७. समुल्लास–६ पृष्ठ २८२

आदि सृष्टि में गर्भवास से उत्पत्ति नहीं भई थी और किसी को बाल्यावस्था भी न थी किन्तु सब स्त्री और पुरुषों की युवावस्था ही ईश्वर ने रची थी फिर वे उस समय अच्छा वा बुरा कुछ नहीं जानते थे परन्तु प्राण शरीर अथवा इन्द्रिय इनमें चेष्टा गुण था ऐसा नहीं जानते थे कि ऐसी चेष्टा करनी वा न करनी फिर चेष्टा होने लगी बाह्य पदार्थों के साथ स्पर्शादिक व्यवहार होने लगे उनमें से किसी ने कुछ पत्ता वा फूल घास स्पर्श किया वा जीभ के ऊपर रक्खा तथा दांतों से चबाने लगे उसमें से कुछ भीतर चला गया कुछ बाहर गिर पड़ा उसको देख के दूसरा भी ऐसा करने लगा फिर कर्त्ते २ व्यवहार बढ़ता चला गया तथा संस्कार भी होते चले होते २ मैथुनादिक व्यवहार भी होने लगे सो पांच वर्ष

तक उस समय किसी को पाप पुण्य नहीं लगता था वैसे ही आजकल में पांच वर्ष तक बालकों को पाप पुण्य नहीं लगता फिर व्यवहार कर्त्ते २ अच्छा बुरा भी कुछ जानने लगे फिर परस्पर उपदेश भी करने लगे कि यह अच्छा है यह बुरा है और परमेश्वर ने भी उक्त पुरुषों द्वारा वेद विद्या का प्रकाश किया वे वेद द्वारा मनुष्यों को उपदेश भी करने लगे।

८८. समुल्लास–९ पृष्ठ २८५

जब शरीर से जीव पाप करते हैं वे वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होते हैं।

८९. जब शरार से पाप करता है तब वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होता है।

९०. समुल्लास-९ पृष्ठ २८९

यज्ञ करने में जिनको अत्यन्त प्रीति ऋषि नाम यथार्थ मन्त्रों के अभिप्राय जानने वाले। देव नाम महादेव और इन्द्रादिक दिव्य गुण वाले चारों वेद ज्योतिष शास्त्र और चन्द्रादिक ज्योति लोक वत्सर काल और सूर्य लोक पितर जो कि नाई सब मनुष्यों के हित करने वाले और पितृ लोक में रहने वाले साध्य जो अभिमान हठादिक दोष रहित होके धर्म और विद्यादि गुणों को सिद्ध करने वाले तथा नारायण और विष्णु आदिक देव जो वैकुण्ठादिक में रहते थे।

९१. समुल्लास-६ पृष्ठ २६०

ब्रह्मा ब्रह्मज्ञान पर्यन्त विद्या का जानने वाला अथवा ब्रह्मलोक का अधिष्ठाता और उस लोक को प्राप्त होने वाले प्रजापति और विश्वसृज जो कि धर्म विद्या से सबके पालन करने वाले वा सिद्ध जो कि परमाणु के संयोग वा वियोग करने वाले और उस विद्या वाले अथवा प्रजापति लोक के अधिष्ठाता वा उनको प्राप्त होने वाले धर्म महान बुद्धि अव्यक्त नाम प्रकृति यह सत्वगुण की उत्तम गति हैं यहाँ से आगे कर्म और उपासना का कोई फल भोग नहीं है सिवाय परमेश्वर के।

९२. समुल्लास-६ पृष्ठ २६४

दुःखों की अत्यन्त जो निवृति उसको मोक्ष कहते हैं कि सब दुःखों से छूट जाना और सदा आनन्द परमेश्वर को प्राप्त हो के रहना फिर लेशमात्र भी दुःख का सम्बन्ध कभी नहीं होता सो केवल एक परमेश्वर के आधार में वह जीव रहता हे और किसी का सम्बन्ध उसको नहीं सो परमेश्वर के योग से उस जीव में सर्व ज्ञात् काल ज्ञान सब पदार्थों का गुण और दोष इनका सत्य बोध भी सदा रहता है।

९३. समुल्लास-६ पृष्ठ २६५

जब अत्यन्त प्रलय होगा तब कोई न रहेगा ब्रह्म का

सामर्थ्य रुप और एक परमेश्वर के बिना, सो अत्यन्त प्रलय तब होगा कि जब सब जीव मुक्त हो जायेंगे बीच में नहीं।

९४. समुल्लास–९ पृष्ठ २९६

प्रश्नः-मुक्ति एक जन्म में होती अनेक जन्म में

उत्तरः-इसका नियम नहीं क्यों कि जब मुक्ति होने का कर्म करता है तभी उसकी मुक्ति होती है अन्यथा नहीं प्रथम सृष्टि में कोई जीव पहिले ही जन्म में मुक्त हो गया होय इसमें कुछ आश्चर्य नहीं उसके पाछे जो कोई मुक्त भया होगा वा होता है और होवेगा सो बहुत जन्म ही में होगा मुक्त मोक्ष अत्यन्त पुरुषार्थ से होता है अन्यथा नहीं।

९५. समुल्लास–१० पृष्ठ २९९

देखना चाहिए कि मुसलमान वा अंग्रेज से छूने में दोष मानते हैं और मुसलमानी वा अंग्रेज के देश की स्त्री से संग करते हैं और अपने पास घर में रख लेते हैं उससे कुछ भेद नहीं रहता यह बड़े अन्धकार की बात है कि मुसलमान और अंग्रेज जो भले आदमी उनसे तो छूत गिनना और वेश्यादिकों में नहीं छूत मानना यह केवल युक्तिशून्य बात है।

९६. समुल्लास–१० पृष्ठ ३०१-३०२

भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार के होते हैं एक वैद्यक शास्त्र

की रीति से और दूसरा धर्म शास्त्र की रीति से देश काल वस्तु और अपने शरीर की प्रकृति उनसे अनूकूल विचार करके भक्षण करना चाहिये अन्यथा नहीं जिससे बल, बुद्धि पराक्रम और शरीर में नैरोग्य बढ़े वैसा पदार्थ भक्ष्य है सोई उक्त वैद्यक सुश्रुत शास्त्र में लिखा है और अभक्ष्यो ग्राम्य शूकरोऽभक्ष्यो ग्राम्य कुक्कुटः। इत्यादिक धर्म शास्त्र से अभक्ष्य का निर्णय करना क्यों कि सूअर गांव का और मुर्गा प्रायः मल ही खाता है उसी का परिणाम मांस होगा उसके खाने से दुर्गन्ध शरीर में होगा उससे रोगोत्पत्ति का संभव है और चित्त भी अप्रसन्न हो जायगा वैसा ही धर्मशास्त्र की रीति से मद्य अभक्ष्य तथा जितने मनुष्यों के उपकारक पशु उनका मांस अभक्ष्य।

६७. प्रश्नः—एक जीव को मार के अग्नि जलाना और फिर खाना यह कुछ अच्छी बात नहीं और जीव को पीड़ा देना किसी को अच्छा नहीं उत्तरः इसमें क्या कुछ पाप होता है, प्रश्न पाप ही होता है क्यों कि जीवों को पीड़ा देके अपना पेट भरना धर्मात्माओं की रीति नहीं। उत्तरः—एक जीव को मारने में पीड़ा होती है सो सब व्यवहारों को छोड़ देना चाहिये क्यों कि नेत्र की चेष्टा से भी सूक्ष्म देह वाले जीवों को पीड़ा अवश्य होती

है और तुम्हारे घर में कोई मनुष्य चोरी करे तो तुम लोग भी अवश्य उसको पीड़ा देओगे और मक्खी आदिक भोजन के ऊपर से उड़ाते हो इसमें भी उसको पीडा होती है और जो कुछ तुम खाते पीते चलते फिरते और बैठते हो इस व्यवहार से भी बहुत जीवों को पीडा होती है इससे तुम्हारा कहना व्यर्थ है कि किसी जीव को पीड़ा न देना।

९८. समुल्लास–१०　　　　　　　　　　पृष्ठ ३०३

परन्तु मनुष्य लोगों को यह चाहिए कि गाय बेल भैंसी छेड़ी भेड़ और ऊंट आदिक पशुओं को कभी न मारें क्यों कि इन्हीं से सब मनुष्यों की आजीविका चलती है जितने दुग्धादिक पदार्थ होते हैं वे सब उत्तम ही होते हैं और एक पशु से बहुत आजीविका मनुष्यों की होती है मारने से जहां सौ मनुष्यों की तृप्ति होती है उस गाय आदिक पशुओं के बीच में से एक गाय की रक्षा से दस हजार मनुष्यों की रक्षा होसकती है इससे इन पशुओं को कभी न मारना चाहिए प्रश्नः— इन पशुओं के नहीं मारने से इनके बहुत होने से पृथ्वी भर जायेगी फिर भी तो मनुष्यों को हानि होने लगैगी। उत्तरः— ऐसा न कहना चाहिए क्यों कि व्याघ्रादिक जीव उनको मारेंगे और कितने रोगों से भी मरेंगे

इससे अत्यन्त नहीं होने पावेंगे और मनुष्यों के मारने से घृतादिक पदार्थ और पशुओं की उत्पत्ति भी नष्ट हो जाती है।

९९. समुल्लास–१० पृष्ठ ३०४

रसोई आदिक जो सेवा सो मूर्ख पुरुष जो शूद्र उसी का अधिकार है ।

१००. समुल्लास–१० पृष्ठ ३०५

सब से भोजन में पाखन्ड कान्यकुब्ज का अधिक है क्यों वे जल भी पीते हैं तो जूते उतार के हाथ पैर धो के पीते हैं तब चौका दे के चने चबाते हैं सो बड़े दुःख पाते हैं।

१०१. समुल्लास–१० पृष्ठ ३०६

नशा करना सबको वर्जित है परन्तु औषध के हेतु कि रोग निवृत्ति होता होय तो चौगुणा जल और एक गुणा मद्य ग्रहण लिखा है सुश्रुतादिक वैद्यक शास्त्र में।

१०२. समुल्लास-११ पृष्ठ ३०७

ए दश समुल्लास शिक्षा के विषय में लिखे इसके आगे आर्यावर्तवासी मनुष्य जैन मुसलमान और अंगरेजों के आचार अनाचार सत्यासत्य मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखेंगे इनमें से प्रथम समुल्लास में आर्यावर्तवासी मनुष्यों के मत मतान्तर के

खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायेगा दूसरे समुल्लास में जैनमत के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायेगा तीसरे में मुसलमानों के मत के विषय में खण्डन और मण्डन लिखेंगे और चौथे में अंगरेजों के मत में खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायेगा सो जो देखा चाहैं खण्डन और मण्डन की युक्ति उन चारों समुल्लासों में देख ले दस समुल्लास तक खण्डन वा मण्डन नहीं लिखा।

१०३. समुल्लास–११ पृष्ठ ३०६

संस्कृत के बिगड़ने से गिरीश लाटीन अंगरेज अरब देश वालों की भाषा बन गई है।

१०४. एक गोलड सटकर साहेब ने पहिले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी विद्या व मत फैले हैं भूगोल में वे सब आर्यावर्त ही से लिये हैं और काशी में वालेण्टेन-साहेब ने यही निश्चय किया है कि संस्कृत सब भाषाओं की माता है तथा दारा शिकोह बादशाह ने भी यह निश्चय किया है कि जो विद्या है सो संस्कृत ही है क्योंकि मैंने सब देशों की भाषाओं की पुस्तक को देखा तो भी मुझको बहुत सन्देह रह गये परन्तु जब मैंने संस्कृत देखा तब मेरे सब सन्देह निवृत हो गये अत्यन्त प्रसन्नता मुझको भई।

१०५. समुल्लास–११ पृष्ठ ३१२

एक द्रविड़ देश के ब्राह्मण काशी में आके एक गौड़पाद पण्डित थे उनके पास व्याकरण पूर्वक वेद पर्यन्त विद्या पढ़ी थी जिसका नाम शङ्कराचार्य था वे बड़े पण्डित भये उनने विचार किया कि यह बड़ा अनर्थ भया नास्तिकों का मत आर्यावर्त देश में फैल गया है और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्या का विचार वे अपने मन से ऐसा विचार करके सुधन्वा नाम राजा था उसके पास चले गये।

१०६. समुल्लास–११ पृष्ठ ३१३

शास्त्रार्थ में शङ्कराचार्य का विजय भया और जैन मत वाले पण्डितों का पराजय हो गया फिर कोई युक्ति जैनियों की नहीं चली किन्तु शङ्कराचार्य की बात प्रमाणों से सिद्ध भई उसी समय सुधन्वा राजा बुद्धिमान था उसकी जैनमत में अश्रद्धा हो गई और वेदमत में श्रद्धा हो गई।

१०७. समुल्लास–११ पृष्ठ ३१४

३२–३३ बरस की उमर में शङ्कराचार्य का शरीर छूट गया उनके मरने से सब लोग का उत्साह भङ्ग हो गया यह भी आर्यावर्त देश वालों के बड़े अभाग्य कि शङ्कराचार्य दश वा बारह बरस भी जीते तो विद्या का प्रचार यथावत हो जाता फिर आर्यावर्त की ऐसी दुर्दशा

कभी नहीं होती क्योंकि जैनों का खण्डन तो हो गया परन्तु विद्या का प्रचार यथावत नहीं भया ।

१०८. समुल्लास-११ पृष्ठ ३१५

संजीवनी नाम राजा भोज ने इतिहास ग्रन्थ बनाया है उसमें बहुत पण्डितों की सम्मति है और यह बात उसमें लिखी है कि तीन ब्राह्मणों ने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण पण्डितों ने रचे थे उनसे राजा भोज ने कहा कि और के नाम से तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहीं था और महाभारत की बात लिखी है कि कितने हजार श्लोक २० बरस के बीच में व्यास जी का नाम करके लोगों ने मिला दिये हैं ऐसे ही पुस्तक बढ़ेगा तो ऊंट का भार हो जायेगा ।

१०९. समुल्लास-११ पृष्ठ ३१६

सो उस संजीवनी ग्रन्थ में राजा भोज ने अनेक प्रकार की बातें पुस्तकों के विषय में और देश के वर्तमान के विषय में इतिहास लिखे हैं सो वह संजीवनी ग्रन्थ बटेश्वर के पास होलीपुरा गांव है उसमें चौबे लोग रहते हैं वे जानते हैं जिसके पास वह ग्रन्थ है परन्तु लिखने वा देखने को वह पण्डित किसी को नहीं देता क्योंकि उसमें सब सत्य२ बात लिखी है उसके प्रसिद्ध होने से पण्डितों की आजीविका नष्ट हो जाती है इस भय से वह उस ग्रन्थ को प्रसिद्ध नहीं करता ।

११०. समुल्लास-११ पृष्ठ ३१६

महमूद गजनवी के पास ३० हजार सेना थी अधिक नहीं और उनके पास दो तीन लाख फौज थी।

१११. समुल्लास-११ पृष्ठ ३२०

सो अठारह करोड़ का माल उस मन्दिर से उसने पाया फिर बहुत सी गाड़ी ऊंट और मजूर उसके पास थे और भी वहां से पकड़ लिये उनके ऊपर सब सामान को लाद के अपने देश की ओर चला सो थोड़े पण्डित महन्त और पुजारी तथा क्षत्रिय वैश्य ब्राह्मण और शूद्र तथा स्त्री बालक दश हजार तक पकड़ के संग ले लिये थे उनका यज्ञोपवीत तोड़ डाला मुख में और थोड़े २ सूखे चने नित्य खाने को देता था और जाजरूर सफा कर वावै पिसवावै घास छिलवावै और घोडों की लीद उठवावै और मुसलमानों के बरतन मंजवावै और सब प्रकार की नीच सेवा उनसे ले ऐसे करातार जब मक्का के पास पहुँचा तब अन्य मुसलमानों ने कहा कि इन काफरों का यहां रखना उचित नहीं फिर उनको बुरी दशा में मार डाला।

११२. समुल्लास-११ पृष्ठ ३२२

चार ब्राह्मणों ने विचार किया कि कोई क्षत्रिय राजा इस देश में अच्छा नहीं है इसका कुछ उपाय

करना चाहिये वे ब्राह्मण चारों अच्छे थे क्योंकि सब मनुष्यों के ऊपर कृपा करके अच्छी बात विचारी यह अच्छे पुरुषों का काम है नीच का नहीं फिर उनने क्षत्रियों के बालकों में से चार अच्छे बालक छांट लिये और उन क्षत्रियों से कहा कि तुम लोग खाने पीने का प्रबन्ध बालकों का रखना उनने स्वीकार किया और सेवक भी साथ रख दिये वे सब आबू पर्वत के ऊपर जाके रहे और उन बालकों को अक्षराभ्यास कराके श्रेष्ठ व्यवहारों की शिक्षा करने लगे।

११३. समुल्लास–११ पृष्ठ ३२४

फिर वे वहां से चले वे चार इन नामों से प्रख्यात थे चौहान पंवार सोलंकी इत्यादिक उनने दिल्ली आदिक में राज्य किया कुछ २ प्रबन्ध भी भया था जब राज्य करने लगे कुछ काल के पीछे सहाबुद्दीन गौरी एक मुसलमान था सो भी उसी प्रकार इस देश में आया था कनोज आदिक में उस समय कनोज का बड़ा भारी राज था सो इस के भय के मारे अपने ही जाके मिला और युद्ध कुछ भी नहीं किया फिर अन्यत्र वह युद्ध जहां तहाँ किया सो उसका विजय भया और आर्यावर्त वालों का पराजय भया फिर दिल्ली वालों से कोई वक्त उसका युद्ध भया उस युद्ध में पृथिराज मारा गया और उसने अपना सेनाध्यक्ष दिल्ली में रक्षा के हेतु रख दिया उसका नाम

ग्रन्थ पुस्तकालय
पं परिग्रहण क्रमांक ......667......
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

कुतुबुद्दीन था वह जब वहां रहा तब कुछ दिन के पीछे उन राजाओं को निकाल के आप राजा भया उस दिन से मुसलमान लोग यहां राज्य करने लगे और सबने कुछ २ जुलुम किया परन्तु उनके बीच में अकबर बादशाह अच्छा भया और न्याय भी संसार में होने लगा तो अपनी बहादुरी से और बुद्धि से सब गदर मिटा दिया उस राजा और प्रजा सब सुखी थे।

११४. समुल्लास–११ पृष्ठ ३२५

दिल्ली में औरंगज़ेब एक बादशाह भया था। उनने मथुरा काशी अयोध्या और अन्य स्थान में भी जा २ के मन्दिर और मूर्त्तियों को तोड़ डाला और जहां २ बड़े २ मन्दिर थे उस स्थान पर भी अपनी मसजिद बना दिया जब काशी में मन्दिर तोड़ने को आया तब विश्वनाथ कुंए में गिर पड़े और माधव एक ब्राह्मण के घर में भाग गये ऐसा ब्राह्मण कहते हैं सो हमको यह बात झूठ मालूम पड़ती है क्योंकि वह पाषाड़ व धातु जड़ पदार्थ कैसे भाग सक्ता है।

११५. समुल्लास–११ पृष्ठ ३२६

जैनों और मुसलमानों ने इस देश को बहुत बिगाड़ा है - सो आज तक बिगड़ता ही जाता है सो आजकल अंगरेज के राजा होने से उन राजाओं के राज्य

से सुख भया है क्योंकि अंगरेज लोग मत मतान्तर की बात में हाथ नहीं डालते और जो पुस्तक अच्छा पाते हैं उसकी अच्छी प्रकार रक्षा कर्त्ते हैं और जिस पुस्तक के सौ रुपये लगते थे उस पुस्तक का छापा होने से पाँच रुपैयों पर मिलता है परन्तु अंगरेजों में भी एक काम अच्छा नहीं हुआ जो कि चित्रकूट परवत पर महाराज अमृतराय जी का पुस्तकालय को जला दिया उसमें करोड़हों रूपैए के लाखहां अच्छे२ पुस्तक नष्ट कर दिये।

११६. समुल्लास-११ पृष्ठ ३२७

मुसलमान की भाषा पढ़ने में अथवा कोई देश की भाषा पढ़ने में कुछ दोष नहीं होता किन्तु कुछ गुण ही होता है। अप शब्द ज्ञान पूर्वके शब्द ज्ञाने धर्मः। यह व्याकरण महाभाष्य का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि अप शब्द ज्ञान अवश्य करना चाहिए अर्थात् सब देश देशान्तर की भाषा को पढ़ना चाहिए क्योंकि उनके पढ़ने से बहुत व्यवहारों का उपकार होता है और संस्कृत के ज्ञान का भी उनको यथावत बोध होता है जितनी देशों की भाषा जानैं उतना ही पुरुष को अधिक ज्ञान होता है क्यों कि सन्स्कृत के शब्द बिगड़ के देश भाषा सब होती है इससे इनके ज्ञानों से परस्पर संस्कृत और भाषा के ज्ञान में उपकार ही होता है

११७. युधिष्ठिर और बिदुर आदिक अरबी आदिक देश भाषा को जानते थे सोई जब युधिष्ठिरादिक लाक्षागृह की ओर चले तब बिदुर जी ने युधिष्ठिर जी को अरबी भाषा में समझाया और युधिष्ठिर जी ने अरबी भाषा से प्रत्युत्तर दिया यथावत उसको समझ लिया तथा राजसूय और अश्वमेध यज्ञ में देशदेशान्तर तथा द्वीप द्वीपान्तर के राजा और प्रजास्थ आए थे उनका परस्पर देश भाषाओं व्यवहार होता था।

११८. समुल्लास–११ पृष्ठ ३३५

सदसद्विवेक कर्मों बुद्धिः पण्डा पण्डा संजाता अस्येति स पण्डितः। जो बुद्धि सदसद्विवेक करने वाली होय उसका नाम पण्डा है और वही पण्डा नाम विवेक युक्त बुद्धि जिसका होय वही पण्डित होता है।

११९.–समुल्लास ११ पृष्ठ ३४८

सन्यासियों ने एक शंकर दिग्विजय रच लिया है उसमें बहुतर मिथ्या कथा रक्खी है उसमें दण्डी लोग और गिरी पुरी आदिक गोसांई लोग अत्यन्त प्रीति करते हैं अर्थात् रामानुज दिग्विजय निंबार्क दिग्विजय माधवार्क दिग्विजय बल्लभ दिग्विजय कबीर दिग्विजय और नानक दिग्विजयादिक अपनी२ बड़ाई वास्ते लोगों ने मिथ्या२ जाल रच लिये हैं शंकराचार्य कोई सम्प्रदाय

के पुरुष नहीं थे किन्तु वेदोक्त चार आश्रमों के बीच संन्यासाश्रम में थे परन्तु उनके विषय में लोगों ने सम्प्रदाय की नांई व्यवहार कर रक्खा है दश नाम लोगों ने पीछे से कल्पित कर लिये हैं जैसे कि किसी का नाम देवदत्त होय इसके अन्त में दश प्रकार के शब्द रखते हैं कि देवदत्ताश्रम १ देवदत्ततीर्थ २ देवदत्तानन्द सरस्वती और इसी का भेद दूसरा कि देवदत्तेन्द्र सरस्वती ३. देवदत्त गिरी ४. देवदत्तपुरी ५. देवदत्त पर्वत ६. देवदत्त सागर ७. देवदत्तारण्य ८. देवदत्त वन ९. देवदत्त भारती १०. ये दश नाम रच लिये हैं फिर इनमें शृंगेरी शारदा भूगोवर्धन और ज्योतिर्मठ ये चार प्रकार के मठ मानते हैं और दण्डियों ने दामोदर नृसिंह नारायण इत्यादिक दण्डों के नाम रख लिये हैं उसमें यज्ञोपवीत बांधते हैं उसका नाम शंख मुद्रादिक रक्खा है ऐसी २ बहुत कल्पना दण्डियों ने भी की हैं किन्तु जो बाल्यावस्था में नाम रहता था सोई सब आश्रमों में रहता था जैसी कि जैगीषव्य आसुरि पंचशिख और बोध्य ऐसे २ नाम संन्यासियों के महाभारत में लिखे हैं इस्से जाना जाता है कि यह मिथ्या कल्पना दण्डी लोगों ने कर लिया है परन्तु दण्डी लोग सनातन संन्यासाश्रमी हैं क्योंकि मनुस्मृत्यादिकों में इनका व्याख्यान देखने में आता है ।

१२०. समुल्लास–११ पृष्ठ ३७१

श्री कृष्ण विद्वान् धर्मात्मा और जितेन्द्रिय थे ऐसा महाभारत में लिखा है।

१२१. समुल्लास–११ पृष्ठ ३७२

/ महाभारत की रीति से और युक्ति से भी यह निश्चय होता है कि ब्रह्मादिक सब हिमालय में रहते थे क्योंकि इस भूमि में उनके चिह्न पाये जाते हैं खाण्डव वन इन्द्र का बाग था पुष्कर में ब्रह्मा ने यज्ञ किया कुरुक्षेत्र में देवों ने यज्ञ किया।

१२२. समुल्लास–११ पृष्ठ ३७३

इस वक्त तक ब्रह्मलोक कैलाश वैकुंठ इन्द्र वरुण कुबेर वसु अग्न्यादिक आठ वसु पुरियों का इन सबके आज तक उत्तर खण्ड में प्रसिद्ध विद्यमानों का होना महाभारत और केदार खण्डादिकों में सबके जो २ चिह्न लिखे हैं उनके प्रत्यक्ष का होना।

१२३. प्रथम सृष्टि मनुष्यों की हिमालय में भई थी फिर धीरे २ बढ़ते चले।

१२४. उत्तराखण्ड में ३३ करोड़ मनुष्य प्रथम थे सब पर्वतों में मिलके फिर जब बहुत बढ़े तब चारों ओर मनुष्य फैल गये उनमें से विद्या बल बुद्धि पराक्रमादिक गुणों से जो युक्त थे वे ब्रह्मादिक देव कहाते थे और उनकी

गद्दी पर जो बैठता था उसका नाम ब्रह्मा पड़ता था वैसे ही महादेव विष्णु इन्द्र कुबेर और वरुणादिक नाम पड़ते थे वैसे मिथिला पुरी में जो गद्दी पर बैठता था उसका नाम जनक पड़ता था।

१२५. समुल्लास-११ पृष्ठ ३७४

हिमालय से दक्षिण देश में आकर रहते थे फिर बड़े कुकर्म करने को लग गये उनका नाम राक्षस पड़ा था और कुछ उन डाकुओं में से अच्छे थे उनका नाम दैत्य पड़ गया था।

१२६. एक शुक्राचार्य दैत्यों का गुरु था और बृहस्पति देवों का।

१२७. हिमालय में देवों के राजस्थान थे इससे दैत्यों का बल अधिक नहीं चलता था सो अब उस हिमालय देवलोक में कोई नहीं है किन्तु सब जो पर्वतवासी हैं देवों का परिवार वही हैं आर्यावर्त्तादिक देशों में जितने उत्तम आचार वाले मनुष्य हैं वे देवों के परिवार हैं और जितने हबसी आदिक आजकल भी जो मनुष्यों के मांस को खा लेते हैं वे राक्षस और दैत्य के कुल के हैं सो महाभारतादिक इतिहासों से स्पष्ट निश्चय होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं।

१२८. समुल्लास-११ पृष्ठ ३८१

कोई कहता है कि मैं रसायन बनाता हूं और दूसरा

कहता है कि मैं पारे का भष्म बनाता हूं उसको कोई खाले तो बुड्ढे का जवान हो जाता है यह भी मिथ्या ही जानना ।

१२६. समुल्लास–११ पृष्ठ ३८४

परन्तु आजकल अंगरेज के राज्य से कुछ २ सुधरना और सुख भया है जो अब अच्छे, २ ब्रह्मचर्य्याश्रमादिक व्यवहार वेदादिक विद्या और पाखण्ड पाषाण पूजनादिकों का त्याग करैं तो इनको बहुत सुख हो जाय क्योंकि राज्य का आजकल बहुत सुख है धर्म विषय में जो जैसा चाहे वैसा करे और नाना प्रकार के पुस्तक भी यन्त्रालयों के स्थापने से सुगमता से मिलती हैं अच्छे, २ मार्ग शुद्ध बन गये हैं तथा राजा और दरिद्र की भी बात राजघर में सुनी जाती है कोई किसी का जबरदस्ती से पदार्थ नहीं छीन सक्ता अनेक प्रकार की पाठशाला विद्या पढ़ने के वास्ते राज प्रेरणा से बनती है और बनी भी हैं उनमें बालकों की यथावत् शिक्षा होती है और पढ़ने से आजीविका भी राजघर में पढ़ने वाले की होती है किसी का बन्धन वा दण्ड राजघर से नहीं होता जिसमें जिसको खुशी होय उसको वह करै अपनी प्रसन्नता से अत्यन्त देश में मनुष्यों की वृद्धि भई है और पृथ्वी भी खेत आदिकों से बहुत हो गई है वनादिक नहीं रहे हैं लड़ाई

बखेड़ा गदर कुछ इस वक्त नहीं होते हैं और व्यवस्था राजप्रबन्ध से सब प्रकार से अच्छी बनी है परन्तु कितनी बात हम को अपनी बुद्धि से अच्छी मालूम नहीं देती हैं उनको प्रकाश कर्त्ते हैं न जाने वे बड़े बुद्धिमान हैं उनने इन बातों में गुण समझा होगा परन्तु मेरी बुद्धि में गुण इन बातों में नहीं देख पड़ते हैं इससे इन बातों को मैं लिखता हूं एक तो यह बात है कि नोन और पौंन रोटी में जो कर लिया जाता है वह मुझको अच्छा नहीं मालूम देता क्यों कि नोन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता किन्तु सबको नोन की आवश्यकता है।

१३०. समुल्लास–११ पृष्ठ ३८५-३८६

और वे मजूरी मेहनत से जैसे तैसे निर्वाह कर्त्ते उनके ऊपर भी यह नोन का दण्ड तुल्य रहता है इस्से दरिद्रों को क्लेश पहुँचता है इस्से ऐसा होय कि मद्य अफीम गांजा भांग इनके ऊपर चौगुना कर स्थापन होय तो अच्छी बात है क्यों कि नशादिकों का छूटना ही अच्छा है और जो मद्यादिक बिल्कुल छूट जाय तो मनुष्यों का भाग्य है क्योंकि नशा से किसी को कुछ उपकार नहीं होता परन्तु रोग निवृत्ति के वास्ते औषधार्थ तो मद्यादिकों की प्रवृत्ति रहना चाहिये क्यों कि बहुत से ऐसे रोग हैं जिनके मद्यादिक ही निवृत्ति-

कारक औषध हैं सो वैद्यक शास्त्र की रीति से उन रोगों की निवृत्ति हो सकती है तो उनको ग्रहण करैं जब तक रोग न छूटे फिर रोग के छूटने से पीछे मद्यादिकों को कभी ग्रहण न करैं क्यों कि जितने नशा करने वाले पदार्थ हैं वे सब बुध्यादिकों के नाशक हैं इस्से इनके ऊपर ही कर लगाना चाहिये और लवणादिकों के ऊपर न चाहिये पौन रोटी से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है क्यों कि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले आये वा लकड़ी का भार उनके ऊपर कौड़ियों के लगने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा इस्से पौन रोटी का जो कर स्थापन करना सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं तथा चोर डाकू परस्त्रीगामी और जूआ के करने वाले इनके ऊपर ऐसा दण्ड होना चाहिये कि जिसको देख वा सुनके सब लोगों को भय हो जाय और उन कामों को छोड़ दें क्योंकि जितने अनर्थ होते हैं वे सब उनसे ही होते हैं सो जैसा मनुस्मृति राजधर्म में दण्ड लिखा हैं वैसा ही करना चाहिये जब कोई चोरी करै तब यथावत् निश्चय करके इसने अवश्य चोरी की है कुत्ते के पंजे की नाईं लोहे का चिह्न राजा बना रक्खे उसको अग्नि में तपा के ललाट के भों के बीच में लगा दे कुछ बेत भी उसको मार दे और गधे पै चढ़ा के नगर के बीच में बजार में जूतियां

भी लगतीं जाय और घुमाया करै फिर उसको कुछ धन दण्ड दे अथवा थोड़े दिन जेहलखाने रक्खै वहां सूखे चने पाव भर तक खाने को दे और रात भर पिसवावै न पीसे तो वहां भी उसको जूते बैठें और दिवस में भी कठिन काम उस्से करावे जब तक वह निर्बल न हो जाय परन्तु ऐसा बहुत दिन न रक्खै जिस्से कि मर न जाय फिर उसको दो तीन दिन तक शिक्षा करे कि सुन भाई तैनें मनुष्य हो के ऐसा बुरा काम किया कि तेरे ऊपर ऐसा दण्ड हुआ हम को भी तेरा दण्ड देख के बड़ा हृदय में दुःख भया और आप भले आदमी ही के व्यवहार करना फिर ऐसा काम कभी न करना चाहिये अच्छे२ काम करना चाहिये जिस्से राजघर में और सभा में तथा प्रजा में तुम लोगों की प्रतिष्ठा होय और आप लोगों के ऊपर ऐसा कठिन जो दण्ड दिया गया सो केवल आप लोगों के ऊपर नहीं किन्तु सब संसार के ऊपर यह दण्ड भया है जिस्से इस दण्ड को देख वा सुन के सब लोग भय करैं और फिर ऐसा काम कोई न करैं ऐसी शिक्षा जितने बुरे कर्म करने वाले हैं उनको दण्ड के पीछे अवश्य करनी चाहिये क्योंकि दण्ड का तो सदा उसको स्मरण रहै और हठी वा विरोधी न बन जाय इस वास्ते शिक्षा अवश्य करना चाहिये केवल शिक्षा वा केवल

अत्यन्त दण्ड से दोनों सुधर नहीं सकते किन्तु दोनों से मनुष्य सुधर सके हैं फिर भी वही चोरी करे तो उसका हाथ काट डालना चाहिये फिर भी वह न माने तो उसको बुरी हवाल से मार डालना चाहिये किसी दिन उसकी आँखें निकाल डालै किसी दिन कान किसी दिन नाक और सब जगह घुमाना चाहिये कि जिसको सब देखैं फिर बहुत मनुष्यों के सामने उसको कुत्ते से चिथवा डालै ऐसा दण्ड एक पुरुष को होय तो उसके राजभर में कोई चोरी की इच्छा भी न करेगा और राजा को भी इनके प्रबन्ध में बड़ा आनन्द होगा नहीं तो बड़े प्रबन्ध में क्लेश होते हैं साधारण दण्ड से वे कभी सुधे होंगे नहीं डाकुओं को भी चोर की नांई दण्ड देना चाहिये और जूआ करने वालों को एक बार करने से ही बुरी हवाल से जैसा कि चोरी का लिखा गधे पर चढ़ानादिक सब करके फिर कुत्ते से चिथंवा डालना चाहिये क्योंकि चोरी परस्त्रीगमन और जितने बुरे कर्म हैं वे जुआरी से ही होते हैं इससे उनके सहाय करने वाले को भी ऐसा दण्ड देना चाहिये ।

१३१. समुल्लास–११ पृष्ठ ३८७-३८८

क्योंकि जितने लड़ाई दंगा चोरी परस्त्रीगमनादिक इनसे ही उत्पन्न होते हैं इससे इनके ऊपर राज दण्ड देने में कुछ थोड़ा भी आलस्य न करै सदा तत्पर रहै

महाभारत में एक दृष्टान्त लिखा है कि सोने चाँदी और अच्छे पदार्थ धरे रहैं उसको कोई न स्पर्श करै तब जानना कि राजा है और धनाढ्य लोग लाखहां रुपैयों की दूकान का किवाड़ कभी नहीं लगावै और रात दिन कोई किसी का पदार्थ न उठावै तब जानना कि राजा है धर्मात्मा इस वास्ते ऐसा उग्र दण्ड चाहिये कि सब मनुष्य न्याय में चलैं अन्याय में कोई नहीं जब स्त्री वा पुरुष व्यभिचार करैं अर्थात् पर पुरुष से स्त्रीगमन करै परस्त्री से पुरुष जब उनका ठीक२ निश्चय हो जाय तब स्त्री के ललाट में अर्थात् भौं के बीच में पुरुष के लिंगेन्द्रिय का चिह्न लोहे का अग्नि में तपा के लगा दे तथा पुरुष के ललाट में स्त्री के इन्द्रिय का चिह्न लगादे फिर जिसको सब देखा करैं फिर उनको भी खूब फजीहत करैं और कुछ धन दन्ड भी करैं पीछे उसी प्रकार से शिक्षा करैं तब बहुत स्त्रियों के सामने उस स्त्री को कुत्तों से चिथवा डालै और पुरुष को बहुत पुरुषों के सामने लोहे तक्त को अग्नि से तपा के सोवा दे उसके ऊपर फिर उसके ऊपर घुमावे उसी पर्यंक के ऊपर उसका मरण हो जाय फिर कोई व्यभिचार कभी न करेगा ऐसा दण्ड देख के वा सुनके और सर्कार कागद को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है इस्से गरीब लोगों को

बहुत क्लेश पहुँचता है सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं क्यों कि इसके होने से बहुत गरीब लोग दुःख पाकर बैठे रहते हैं कचहरी में बिना धन से कुछ बात होती नहीं इस्से कागजों के ऊपर जो बहुत लगाना है सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है क्यों कि थाने से ले के आगे २ धन का ही खर्च देख पड़ता है न्याय होना तो पीछे फिर नाना प्रकार के लोग साक्षी झूठ सच बना लेते हैं यहां तक कि सत्तू खाने को दे देओ और झूठी गवाही हजार वक्त दिवा देओ जो जैसा मनु में दण्ड लिखा है वैसा दण्ड चले तो खाने पीने के वास्ते झूठी साक्षी देने को कोई तैयार नहीं होय अवाङ् नरकमभ्येति प्रेत्य स्वर्गाच्चहीयते इसका यह अभिप्राय है कि यह निश्चय हो जाय कि इसने झूंठ साक्षी दी तब उसकी जीभ कचहरी के बीच में काट ले वही अवाक् नाम जीभ रहित जो नरक भोग उसको प्रत्यक्ष होय क्यों कि राजा प्रत्यक्ष न्याय कर्त्ता है उसी वक्त उसको प्रत्यक्ष ही फल होना चाहिये और जितने अमात्य विचारपति राजघर में होवैं उनके ऊपर भी कुछ दण्ड व्यवस्था रखनी चाहिये क्यों कि वे भी अत्यन्त सच झूंठ के विचार में तत्पर होके न्याय ही करने लगे देखना

चाहिये कि एक के यहां अर्जीपत्र दिया उसके ऊपर विचार पति ने विचार करके अपनी बुद्धि और कानून की रीति से एक की जीत की और दूसरे का पराजय जिसका पराजय भया उसने उसके ऊपर जो हाकिम होता है उसके पास फिर अपील करी सो प्रायः जिसका प्रथम विजय भया था उसको दूसरे स्थान में पराजय होता है और जिसका पराजय होता है उसका विजय फिर ऐसे ही जब तक धन नहीं चूकता दोनों का तब तक बिलायत तक चढ़ते ही चले जाते हैं प्रायः रहीस लोग इस बात से हठ के मारे बिगड़ जाते हैं इससे क्या चाहिये कि विचार करने वाले के ऊपर भी दण्ड की व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे वे अत्यन्त विचार करके न्याय ही करैं ऐसा आलस्य न करैं कि जैसा हमारी बुद्धि में आया वैसा कर दिया तुमको इच्छा होय तो तुम आओ अपील कर देओ ऐसी बातों से विचार पति भी आलस्य में आ जाते हैं और विचारपति को अत्यन्त परीक्षा करनी चाहिये कि अधर्म से डरते होंय और विद्या बुद्धि से युक्त होय काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोष जिनमें न होय और अन्तर्यामी जो सब का परमेश्वर उससे ही जिनको भय होय और से नहीं सो पक्षपात कभी न करैं किसी प्रकार से तब उस राजा की प्रजा को सुख हो सक्ता है अन्यथा नहीं और

पुलिस का जो दरजा है उसमें अत्यन्त भद्र पुरुषों को रखना चाहिये क्यों कि प्रथम स्थान न्याय का यही है इस्से ही आगे प्रायः वाद विवाद के व्यवहार चलते हैं।

१३२. समुल्लास—११ पृष्ठ ३८६

इस स्थान में जो पक्षपात से अनर्थ लिखा पढ़ा जायगा सो आगे भी अन्यथा प्रायः लिखा पढ़ा जायगा और अन्यथा व्यवहार भी प्रायः हो जायगा इस्से पुलिस में अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुषों को रखना चाहिये अथवा पहिले जैसे चौकीदार महल्ले२ में एक रहता था उस्से बहुधा अन्याय नहीं होता था जब से पुलिस का प्रबन्ध भया है तब से बहुधा अन्यथा व्यवहार ही सुनने आता है।

और गाय बैल भैंसी छेरी और भेंडी आदिक मारे जाते हैं इस्से प्रजा को बहुत क्लेश प्राप्त होता है औ अनेक पदार्थों की हानि भी होती है क्यों कि एक गैया १० सेर दूध देती है कोई ८ सेर छः ६ सेर पांच ५ सेर और दो २ सेर तक इसके मध्य छः ६ सेर नित्य दूध गिना जाय कोई दस मास तक दूध देती हैं कोई छः ६ मास तक उसका मध्यस्थ आठ मास तक गिना जाता हैं सो एक मास भर में सवा चार मन दूध होता है उसमें चावल डाल के चीनी भी डाल दें तो सौ पुरुष तृप्त हो सके हैं जो ऐसे ही पिये तो ८० पुरुष

तृप्त हो जायेंगे और ८०० वा ६४० पुरुष तृप्त हो सक्ते हैं कोई गाय १५ दफे बियाती है कोई दस दफे उसका हमने १२ वक्त रख लिये से ९६०० सै पुरुष तृप्त हो सक्ते हैं फिर उसके बछड़े और बछियां बढ़ेंगे उनसे बहुत बैल और गाय बढ़ेंगी एक गाय से लाख मनुष्यों का पालन हो सक्ता है उसको मार के मांस से ८० पुरुष तृप्त हो सक्ते हैं फिर दूध और पशुओं की उत्पत्ति का मूल ही नष्ट हो जाता है सो बैल आर्यावर्त्त में पांच रुपैयों से आता था सो अब ३० से भी नहीं आता और कुछ गांव और नगर के पास पशुओं के चरने के वास्ते उसकी सीमा में भूमि रखनी चाहिये जिसमें कि वे पशु चरैं जैसी दुग्धादिक से मनुष्य के शरीर की पुष्टि होती है वैसी सूखे अन्नादिकों से नहीं होती और बुद्धि भी नहीं बढ़ती इस्से राजा को यह बात अवश्य करनी चाहिये जिन पशुओं से मनुष्य के व्यवहार सिद्ध होते हैं और उपकार होता है वे कभी न मारे जांय ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये जिस्से सब मनुष्यों को सुख होय वैसा ही प्रजास्थ पुरुषों को भी करना उचित है।

१३१. समुल्लास—११ पृष्ठ ३९०-३९१

सो राजा से प्रजा जिस्से प्रसन्न रहे और प्रजा से राजा प्रसन्न रहै यही बात करनी सब को उचित है

देखना चाहिये कि महाभारत में सगर राजा की एक कथा लिखी है उसका एक पुत्र असमंजा नाम था उसको अत्यन्त शिक्षा की गई परन्तु उसने अच्छा आचार व विद्या ग्रहण नहीं की और प्रमाद में ही चित्त देता था सो उसकी युवावस्था भी हो गई परन्तु उसको शिक्षा कुछ न लगी राजादिक श्रेष्ठ पुरुषों को उसके ऊपर प्रसन्नता नहीं भई फिर उसका विवाह भी करा दिया एक दिन सर्जू में असमंजा स्नान के लिये गया था वहां प्रजा के बालक आठ२ दस२ बरस के जल में स्नान करते थे और क्रीड़ा भी करते थे सो उनमें से एक बालक बाहर निकला उसको पकड़ के असमंजा ने गहिरे जल में फेंक दिया सो बालक डूबने लगा तब कोई प्रजास्थ पुरुष ने बालक को पकड़ लिया उसके शरीर में जल प्रविष्ट होने से वह मूर्छित हो गया उसकी दशा को देख के असमंजा बहुत प्रसन्न भया और हंस के घर को चला गया कोई बालक उसके पिता के पास गया और कहा कि तुमारे बालक की यह दशा है राजा के पुत्र ने कर दी सुनके उसकी माता पिता और सब कुटुम्ब के लोग दुःखी भये उसको देख के फिर उस बालक को उठा के जहाँ सगर राजा की सभा लगी थी वहाँ को चले राजा सभा के बीच में सिंहासन पे बैठे थे सो उनको आते दूर से देख के झट

उठ के उनके पास चले गये और पूछा कि इस बालक को क्या भया तब उनकी माता रोने लगी. राजा ने देख के बहुत उनको धैर्य दिया कि तुम रोओ मत बात कह देओ कि क्या भया तब बालक का पिता बोला कि हमारे बड़े भाग्य हैं कि आपके जैसे राजा हम लोग के ऊपर हैं दूर से देख के प्रजा के ऊपर कृपा करके पूंछना और दौड़ के आना यह बड़ा प्रजा का भाग्य है इस प्रकार का राजा होना फिर राजा ने पूंछा कि तुम अपनी बात कहो तब उसने राजा को कहा कि एक तो आप हैं और एक आपका पुत्र है जो कि अपने हाथ से ही प्रजा को मारने लगा और जैसा भया था वैसा सत्य२ हाल राजा से कह दिया तब राजा ने वैद्यों को बोला के उसका जल निकलवा डाला और ओषधों से उसी वक्त स्वस्थ बालक हो गया फिर सभा के बीच में बालक उसकी माता पिता और जिसने बालक निकाला था वह भी वहां था फिर राजा ने सिपाहियों को राजा ने आज्ञा दी कि असमंजा की मुसकैं चढ़ा के ले आओ सिपाही लोग गये और वैसे ही उसको बांध के ले आये असमंजा की स्त्री भी संग२ चली आई और सभा में खड़े कर दिये राजा ने पुत्र की स्त्री से पूंछा कि तू इसके साथ जाने में प्रसन्न है वा नहीं तब उसने कहा

कि अब जो दुःख वा सुख होय परन्तु मेरे अभाग्य से ऐसा पति मिला सो मैं साथ ही रहूंगी प्रथक् नहीं तब राजा ने असमंजा से कहा कि तेरा कुछ भाग्य अच्छा था कि यह बालक मरा नहीं जो यह मर जाता तो तुझ को बुरे हवाल से चोर की नांई मैं मार डालता परन्तु तुझ को मैं मरण तक का वनवास देता हूं सो तू कभी गांव में वा नगर में अथवा मनुष्यों के पास खड़ा रहा वा गया तो तुझ को चोर की नांई मार डालेंगे इससे तू ऐसे बन में जा के रह कि जहां मनुष्य का दर्शन भी न होय सिपाहियों से हुकम दे दिया कि जाओ तुम घोर बन में इन दोनों को छोड़ आओ उसको न वस्त्र दिये अच्छे२ न सवारी दी न धन दिये किन्तु जैसे सभा में खड़े थे वैसे ही छोड़ आये।

१३२. समुल्लास-११ पृष्ठ ३९२

एक भर्त्त नाम राजा था जिसके नाम से इस देश का भरत खण्ड नाम रक्खा गया है उसके भी नव पुत्र थे सो २५ वर्ष के ऊपर सब हो गये थे परन्तु मूर्ख और प्रमादी थे राजा ने और प्रजास्थ पुरुषों ने विचार किया कि इनमें से एक भी राजा होने के योग्य नहीं सो भरत राजा ने इस्तिहार करके पुरुष और स्त्री लोगों को बुलाया जो प्रतिष्ठित राजा और प्रजास्थ थे सो एक

मैदान में समाज स्थान बनाया उसके बीच में एक मंचान भी गाड़ दिया सो जब सब लोग एक दिन इकट्ठे भये परन्तु किसी को विदित न भया कि राजा क्या करेगा और क्या कहेगा फिर मंचान के ऊपर राजा ने चढ़ के सब से कहा कि जिन राजा अथवा प्रजास्थ रहीस लोगों का पुत्र इस प्रकार का दुष्ट होय उसको ऐसा ही दण्ड देना उचित है जो कि इस वक्त हम अपने पुत्रों को देंगे सो सदा सब सज्जन लोग इस नीति को मानैं और करें फिर मंचान से उतरे और नव पुत्र भी बीच में खड़े थे सब समाज वाले देख भी रहे थे और उनकी माता भी सो सब के सामने खड्ग हाथ में ले के नवों का सिर काट के और मंचान के ऊपर बांध दिये फिर भी सब से कहा कि जो किसी का पुत्र ऐसा दुष्ट होय उसको ऐसा ही दण्ड देना चाहिये क्यों कि जो हम इनका सिर न काटते तो येह हमारे पीछे आपस में लड़ते राज्य का नाश करते और धर्म की मर्यादा को तोड़ डालते इस्से राजपुत्र वा प्रजास्थ जो श्रेष्ठ धनाढ्य लोग उन को ऐसा ही करना उचित है अन्यथा राज्य धन और धर्म सब नष्ट हो जायेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं देखना चाहिये कि

१३३. समुल्लास-११ पृष्ठ ३६३

आर्यावर्त्त देश में ऐसे २ राजा और प्रजास्थ श्रेष्ठ पुरुष होते थे सो इस वक्त आर्यावर्त्त देश में ऐसे भ्रष्टाचार हो गये हैं कि जिनकी संख्या भी नहीं हो सकी, ऐसा सर्वत्र भूगोल में देशे कोई नहीं, ऐसा श्रेष्ठ आचार भी किसी देश में नहीं था परन्तु इस वक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डों से चक्रांकितादिक सम्प्रदायों के वाद विवादों से भागवतादिक ग्रन्थों के प्रचार से ब्रह्मचर्याश्रम और विद्या के छोड़ने से ऐसा देश बिगड़ा है कि भूगोल में किसी देश की नहीं जैसी कि दुर्दशा महाभारत के युद्ध के पीछे आर्यावर्त्त देश की भई है सो आजकल अंगरेजों के राज्य में कुछ२ सुख आर्यावर्त्त देश में भया है सो इस वक्त वेदादिक पढ़ने लगें ब्रह्मचर्याश्रम चालीस वर्ष तक करें, कन्या और बालक सब श्रेष्ठ शिक्षा और विद्या वाले होवें इन मतमतान्तरों के वाद विरुद्ध आग्रहों को छोड़ें सत्य धर्म और परमेश्वर की उपासना में तत्पर होवें तो इस देश की उन्नति और सुख हो सकता है अन्यथा नहीं।

१३४. समुल्लास-११ पृष्ठ ३६४

पश्चाताप जो होता है किये भये पापों का निवर्त्तक नहीं होता किन्तु आगे कर्त्तव्य पापों का

निवर्त्तक होता है ।

१३५. समुल्लास-११ पृष्ठ ३६४-३६५

वर्णाश्रम की सत्य व्यवस्था शास्त्र की रीति से उसका छेदन करता है सो सब मनुष्यों के अनुपकार का कर्म है यह तृतीय समुल्लास में विस्तार से लिख दिया है वहीं देख लेना यज्ञोपवीत केवल विद्यादिक गुणों और अधिकार का चिह्न है उसका तोड़ना साहस से इस्से भी अत्यन्त मनुष्यों का उपकार नहीं होता किन्तु विद्यादिक गुणों से वर्णाश्रम का स्थापन करना शास्त्र की रीति से, इससे ही मनुष्यों का उपकार हो सकता है संसाराचार की रीति से नहीं वे ब्राह्मणादिक वर्ण वाचक जो शब्द हैं उनको जातिवाचक ब्राह्मण लोग जान के निषेध कर्त्ते हैं सो केवल उनको भ्रम है किन्तु शास्त्र की रीति से मनुष्यादिक जाति वाचक शब्द हैं सो मनुष्य वृक्षादिक की एकता कोई नहीं कर सकता सो मनुष्यादिक शब्द जातिवाचक शास्त्र में लिखे हैं सो सत्य ही हैं और खाने पीने से धर्म किसी का बढ़ता नहीं और न किसी का घटता इसमें भी अत्यन्त जो आग्रह करना कि कि सब के साथ खाना अथवा किसी के साथ नहीं वही धर्म मान लेना यह भी अनुचित बात है किन्तु नष्ट भ्रष्ट संस्कार हीन पदार्थों के खाने और पीने से मनुष्य का अनुपकार

होता अन्यत्र नहीं ।

१३६. समुल्लास-११ पृष्ठ ३९५

और वार्षिक उत्सवादिकों में मेला करना इसमें भी हमको अत्यन्त श्रेष्ठ गुण मालूम नहीं देता क्योंकि इसमें मनुष्य की बुद्धि वहिर्मुख हो जाती है और धन भी अत्यन्त खर्च होता है केवल अंगरेजी पढ़ने से संतोष कर लेना यह भी अच्छी बात उनकी नहीं है किन्तु सब प्रकार की पुस्तक पढ़ना चाहिये परन्तु जब तक वेदादिक सनातन सत्य संस्कृत पुस्तकों को न पढ़ेंगे तब तक परमेश्वर धर्म कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य विषयों को यथावत नहीं जानेंगे इस्से सब पुरुषार्थ से इन वेदादिकों को पढ़ना और पढ़ाना चाहिये इस्से सब विघ्न नष्ट हो जायेंगे अन्यथा नहीं ।

१४०. समुल्लास-१२ पृष्ठ ४०७

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामि कृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते द्वादशः समुल्लासः सम्पूर्णः ।१२।

आर्य समाज की स्थापना विषयक
अधिकृत विधिपत्र

टिप्पणी. श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा स्थापित "आर्य समाज"

टिप्पणी:—बम्बई [काकड़वाड़ी] के "पञ्जीकृत ट्रस्ट डीड" का जो अंग्रेजी भाषा में है, यह आर्यभाषा [हिन्दी] में अनुवाद है इस पञ्जीकृत पत्रक में, माननीय पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी की अध्यक्षता मे, रविवार, ७ मार्च १८७५ ईसवी को सम्पन्न हुई सभा में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज द्वारा आर्य समाज स्थापित किये जाने का वर्णन है, तथा इसी सभा में वर्तमान दश नियमों के निर्धारित किये जाने का वर्णन है।

तीन रुपये		स्टाम्प पत्र	
लेखपत्र की संख्या	पुष्टिकरण पत्र तथा प्रमाण पत्र [धारा, ५२, ५८, ५६, ६०]		लेख पत्र की प्रतिलिपि
१२६५ ए,	दैनिक संख्या, ५ १३ अप्रैल १८८८ ई० को उपपञ्जीकरण कार्यालय बम्बई में शुक्रवार १८८८ ई० को दिन के २.५५ बजे प्रस्तुत किया	स्टाम्प ह०।- जे. एस. एम. १० रु०	स्टाम्प ह०।- जे. एस. एम. ५ रु०
		बम्बई आर्य समाज	

गया।

हस्ताक्षर/–प्राणजीवनदास
कल्याणदास

ह०/-ए. त्र्यम्बक
उप पञ्जीकरण
अधिकारी बम्बई।

निम्नलिखित शुल्क
प्राप्त किया।

पञ्जीकरण शुल्क
रु० १४– ०
प्रतिलिपि शुल्क रु० १–१४
[१२ परत] योग———
१५–१४

———

ह०/-ए. त्र्यम्बक

१२६५ ए. उप पञ्जीकरण अधिकारी बम्बई। राव बहादुर गोपाल राव हरि देशमुख, क्रियान्वित करने वाला पक्ष, सरकारी पेन्शनर, अब बम्बई निवासी, सम्पन्न व्यवस्था को मान्य करते हैं। ये उप पञ्जीकरण अधिकारी के परिचित

ह०/-टी. जे. एल. डी.

——— १३ अप्रैल
अस्पष्ट भाग एक हजार
आठ सौ
अट्ठासी ई० को

———

राव बहादुर गोपाल और हरि देशमुख, सेवकलाल कृष्णदास, सुन्दरदास धरमसी, जीवन दास मूलजी तथा प्राण जीवन दास कल्याणदास, सभी बम्बई निवासी हिन्दू [जो इसमें ट्रस्टीगण के रूप में उल्लिखित हैं] [एक] प्रथम पक्ष तथा आर्य समाज बम्बई के तात्कालिक सदस्य [जो इसमें "समाज" के नाम से उल्लिखित हैं] द्वितीय पक्ष जहां तक लगभग एक हजार आठ सौ पिचहत्तर ईसवी में कतिपय बम्बई निवासियों ने माननीय दिवंगत दयानन्द सरस्वती स्वामी के उपदेशित वेद प्रतिपादित व्यवस्था के अनुसार, धार्मिक, सामाजिक, तथा नैतिक सुधारों के उद्देश्य से एक "समाज"

हैं।

ह०- गोपाल राव हरिदेशमुख

सेवक लाल कृष्णदास क्रियान्वित करने वाला पक्ष व्यौपारी, जगजीवन कीका गली निवासी, सम्पन्न व्यवस्था को स्वीकार करते हैं।

ह०/ सेवकलाल कृष्णदास सुन्दरदास घरमसी क्रियान्वित करने वाला पक्ष व्यौपारी, हौर्न वीरो निवासी सम्पन्न व्यवस्था को स्वीकार करते हैं ये उप पञ्जीकरण अधिकारी के परिचित हैं

ह०/सुन्दर दास घरमसी जीवनदास मूल जी क्रियान्वित करने वाला पक्ष दलाल, हौर्न वो रा निवासी

स्थापित करने की इच्छा से अभीप्सित समाज, के प्रवर्तकों की एक सभा उक्त पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी की अध्यक्षता में सात मार्च एक हजार आठ सौ पिचहत्तर ईसवी, में सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये।

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी दयालु, अजन्मा अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी अजर अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३ वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य को ग्रहण करने और

सम्पन्न व्यवस्था को स्वीकार करते हैं।

ये उप पञ्जीकरण अधिकारी के परि- चित हैं।

ह०/ जीवनदास मूल जी

प्राणजीवन दास कल्याणदास क्रिया- न्वित करने वाला पक्ष अध्यापक पिढ़ौनी निवासी, सम्पन्न व्यवस्था को स्वीकार करते हैं।

ह०/ प्राणजीवनदास कल्याणदास

श्री हरिश्चन्द्र श्याम राव अनुवादक तथा द्विभाषिया उच्च न्यायालय, काकड़ वाड़ी निवासी उप- पञ्जीकरण अधि- कारी के परिचित,

सेवकलाल कृष्णदास तथा प्राणजीवनदास कल्याण दास के

असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को को विचार कर करने चाहिये।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानु- सार यथा योग्य वर्त्तना चाहिये।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनो चाहिये।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०. सब मनुष्यों को सामा- जिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

और यह था कि उक्त सभा ने निश्चय किया कि इस प्रस्ताव के अनुसार "समाज" जो कि

परीक्षण पूर्वक साक्षी
ह०/हरिश्चन्द्र श्याम राव
१३ अप्रैल
१८८८ ई०
ह/० त्र्यम्बक
१२९५ ए, उप पञ्जीकरण
अधिकारी. बम्बई
पञ्जीकृत, संख्या,
१२९५ ए.
पुस्तक संख्या - १
वौल्यूम संख्या २४९
पृष्ठ संख्या २४१ से
२४७ तक
ह०/ त्र्यम्बक
उप पञ्जी करण
अधिकारी,
बम्बई
उप पञ्जीकरण
अधिकारी,
बम्बई
की मुहर

बम्बई आर्य समाज के नाम से प्रख्यात है, स्थापित किया गया, तथा कार्य संचालन के लिये कुछ सदस्यों की "प्रबन्धक समिति" नियुक्त की गई तथा जो कि पूर्वोक्त उद्देश्यों के प्रचार के लिये समाज समय समय पर चन्दा तथा दान प्राप्त करने का व्यवस्था करेगा तथा उन्हें प्राप्त करेगा । जैसा कि अट्ठाइस फरवरी एक हजार आठ सौ बयासी ईसवी को गोपाल दास करमसी प्रथम पक्ष तथा ट्रस्टीगण द्वितीय पक्ष के मध्य एक इकरारनामा हुआ । जिसके द्वारा छः हजार चार सौ रुपये ट्रस्टीगण द्वारा उक्त गोपालदास करमसी को पूर्वोक्त चन्दे और दान में से दिये गये । उक्त गोपाल दास करमसी ने स्वीकार किया कि वर्तमान "ट्रस्टीगण" अथवा ट्रस्टीगण उनके स्थान पर उनकी ट्रस्टीशिय अथवा सबकी ट्रस्टीशिप के अन्तगत, ट्रस्ट द्वारा समाज का कार्य संचालन करने में असमर्थ होने अथवा उनकी मृत्यु अथवा उन सबकी मृत्यु होने पर ट्रस्टी नियुक्त कर सकते हैं ।

उत्तराधिकार में प्राप्त भूमि अथवा यह भूमि खन्ड, बम्बई फोर्ट के बाह्य भाग में माण्डवी उपजिले में काकड़ वाड़ी में स्थित है तथा रैवैन्यू कलक्टर संख्या २३२ [अस्पष्ट भाग] तथा १७४१ [नवीन] में पञ्जीकृत है, म्यूनिसिपल कमिश्नर संख्या २ तथा ३ द्वारा निर्धारित है। माप में नौ सौ नवासी वर्ग गज के लगभग है तथा इसकी सीमा लगभग यह है। पूर्व में भाई दास काकीदास नागर की सम्पत्ति तथा पश्चिम में जन माग काकड़वाड़ी गली, [सम्पत्ति के दक्षिण में] उत्तर में गिरगांव पुलिस न्यायालय दक्षिण में स्वामी रामाचार्य तथा पूर्णाचार्य की सम्पत्ति।

सम्पत्ति जो पूर्वकाल से हो उसके भागों सहित उक्त गोपाल दास करमसी द्वारा अधिकृत थी तथा अब है, ट्रस्टीगण तथा उनके उत्तराधिकारियों द्वारा "समाज" के उपयोग के लिये सदैव के लिये अधिकृत है। जैसा कि दोनों पक्ष इच्छुक हैं कि ट्रस्ट की घोषणा को क्रियान्वित किया जाय जिसकी कि ट्रस्टीगण ने यहां उपस्थित होते समय सहमति व्यक्त की थी। अब यह इकरार नामा साक्षी है कि समझौते का पालन करने तथा क्षेत्र के आदर करने के विषय में, ट्रस्टीगण तथा उनमें से प्रत्येक ट्रस्टी यह घोषणा करता है कि ट्रस्टीगण तथा उनके उत्तराधिकारी अथवा निर्वहक "समाज" के अथवा समाज के लिये पूर्वोक्त क्षेत्र के विषय में गृहीत अथवा उत्तराधिकार में प्रतिपादन के लिये अधिकृत, समझौते का पालन करेंगे। वे यह भी घोषणा करते हैं कि पूर्वोक्त क्षेत्र के विषय में किसी भी प्रकार से धन प्राप्त नहीं कर सकेंगे। वे समाज की मान्यताओं तथा उद्देश्य के अनुसार बहुमत के अनुरुप व्यवस्था करेंगे। ट्रस्टीगण में से प्रत्येक स्वयं, उनके उत्तराधिकारी, कार्य सम्पादन करने वाले, समाज के सदस्यों के भली भांति परिचित

हैं। उन्होंने अर्थात् ट्रस्टीगण ने कभी भी सामूहिक अथवा निजी रुप में समझौते के विधिपत्र को हानि नहीं पहुंचाई है तथा उनने अथवा उनमें से किसी ने भी उपस्थित लोगों को कार्य करने से भी कभी नहीं रोका है साक्षी स्वरुप उक्त पक्षों के जैसा कि अंगूठा निशानी तथा मुहर दिन तथा वर्ष ऊपर अंकित हैं।

५—६

उक्त लोगों के हस्ताक्षर हुये, मुहर लगाई गई तथा प्रतियां प्रदान की गई।

ह०/ गोपाल राव हरिदेशमुख (मुहर)
ह०/ सेवकलाल कृष्णदास (मुहर
ह०/ सुन्दरदास धरमसी (गुजराती में) (मुहर
ह०/ जीवन दास मूल जी (मुहर)
ह०/ पी० (अस्पष्ट भाग) कल्याण दास (मुहर)

मिलाकर देखी गई
ह०/-

सत्य प्रति

ाब्द "एण्ड" २४१ पृष्ट पंक्ति २२ में, मरचैन्ट, पंक्ति में पृष्ठ २४३ ार कालम २ में "डैथ इन हिम" १८ पृष्ठ २४४ पर, "एण्ड" ंक्ति ५ में "साउथ वाई दी प्रापर्टी" पंक्ति ५-६ पृष्ट २४५ पर नकल के समय गलती से लिखे गये हैं तथा कोष्ठक में हैं
ाब्द "वन" पंक्ति ३ पृष्ठ २४२ पर अशुद्ध लिखा गया है, कोष्ठक ं है और ऊपर लाल स्याही से अङ्कित है।
ाब्द और अक्षर 'पण्डित" पृष्ठ २४२ पंक्ति में "लिटिल" पंक्ति २ व पंक्ति १३ में कालम २ में पृष्ठ २४५, नकल के समय छोड़ दिये

गये हैं। ऊपर लाल स्याही से अङ्कित हैं।

प्रतिलिपि कर्त्ता
ह० /-

ह० /- ए० त्र्यम्बक
उप पञ्जीकरण अधिकारी
बम्बई।

पढ़ी गई तथा मिलाई गई
द्वारा ह०/-

सत्य प्रति

संशोधन संख्य ९ [नौ] संख्या [१, २, ५, ७ तथा ८]
खुरची गई संख्यायें [३, ४, ६ तथा ९] परिवर्तित।

ह०
उपपञ्जीकरण अधिकारी बम्बई

Authentic Document about the day when Arya Samaj at first established.

Note—According to registered trust deed of Arya Samaj Bombay, a meeting of the promotors of the said intended institution was held at Bombay under the presidency of revered Pandit Dayanand Saraswati Swami on Sunday the seventh day of March one thousand eight hundred and seventy five and Arya Samaj was established and at such meeting ten principles were adopted which are same still now

Authentic, Document about the day when Arya Samaj at first Established

THREE RUPEES STAMP PAPER

Serial Number of Instruments	*Endorsement and certificate (Sections 52, 58, 59 and 60*	*Copy of Instrument*
1295	A Daily No 5 of 13 April 1888 Presented at the Bombay Sub Registry Office on Friday the 13th April 1888 at 2.55 P. M. Sd/- Pranjiwandas. Kaliandas Sd/- A. Trimback. Sub-Registrar of Bombay. Received fees as follows: Regis-	Stamp | *Stamp* Sd/- | *Sd/-* J.S.M. | J.SM. Rs. 10 | Rs. 5 The Bombay Arya Samaj Sd/- T.J.L.D. ———13th day of Torn Portion April one thousand ———eight hundred eighty eight Between Rao Bahadoor Gopai (and) Hary Desmukh Sewaklal Kurson Das SoondardasDharumsi Jewandas Mooljee

tration fees
Rs. 14-0
Copying fee 1-14
(12 folios) --
Tot-l Rs. 15-14
1295 A Sd/A Trimback Sub-Registrar of Bombay. Rao Bhadur Gopal Rao Hari Desh-Mukh executing party Government pensioner residing at Poona now in Bombay admits execution: He is known to the Sub-Registrar.
Sd/- Gopalrao Deshmukh.
Sewklal Kursondass xecuting party nerchant resi-

and Pranjeewandas Kalwandas all of Bombay Hindu inhabitants (herein-after called the "Trustees") (one) the one part and the mem- for the time being of the Bombay Arya Samaj (hereinafter called the Samaj) of the other part whereas in or about the Christian year one thousand eight hundred and seventy five a certain in-habitant of Bombay being desirous of establishing a 'Samaj' in Bombay with the object and for the purpose of carrying out Religious, Social and moral reforms on the authority of the Vedas as explained and taught by the late revered Dayanand Saraswati

ding at Jag-Jjwan Kika Street admits execution.
Sd/- Sewaklal Kursondas Soonderdas Dhurumsey executing party merchant residing at Hornby row admits execution. He is known to the Sub-Registrar.
Sd/-Sunderdas Dharamshi.
Jeewandas Mooljee executing party Broker residing at Hornby Row admits execution. He is known to the Sub Registrar.

Swami a meeting of the promoters A of the intended institution was held at Bombay on the Seventh day of March one thousand eight hundred and seventy five under the presidency of the said Pandit Daynand Saraswati Swami and at such meeting the following principles were adopted - God is the fountain of all true knowledge and the paimeral case of all things knowable.

2. Worship is alone due to (God) who is all truth all knowledge al Bantitude (torn parts) ———Almighty jus (Torn portion) mercifu unbegotten.

(Torn portion)

In comparable th

Sd/-Jeewandas Mooljee.

Pranjeewandas Kaliandas executing party master residing at Pydhowni admits execution

Sd/-Pranjeewan das Kaliandass.

Mr. Harish Chandra Shamrao Translator and inter preter High Court residing at Kakadwady and known to the Sub Registrar, examined as to identity of,

Sewaklal Cursondas and

Pranjiwandas Kaliandas.

-----(Torn portion) all pervading, ommiscient imperishable, immortal. Eternal Holy and the cause of the universe,

3. The Vedas are the Books of true knowledge and it is the paramount duty of every Arya to read or hear them read to teach and preach them to others.

4. An Arya should always be ready to accept truth and renounce untruth when discovered.

5. Truth arrived at often consumerate deliberation should be his guiding principle on all actions.

6. The primary object of the Samaj is to do good to the world by improving the physical,

Sd/- Haris-
chandra Shamrao 13th April
1888
Sd/-
A Trimback.
1295 A Sub-Registrar
of Bombay.
Registered No
1295A at pages 241 to 247
Vol 24 B
of Book No. I
Sd/-
A. Trimback
Sub- Registrar
of Bombay.
Ist May 1888.
Seal of the Sub-
Registrar of
Bombay

intellectual, moral, social and spiritual condition of mankind.

7. Due love for all and appreciation of justice, an Arya should manifest in his behaviour towards others.

8. He should endeavour to diffuse knowledge and dispell Ignorance.

9. He should not be content with his own improvement but a look for it in that of others.

10. In matters which affect the general social well being of our race he ought to discard all differences and not allow his Individuality, to interfere but in strictly personal matters everyone may have his own way.

And it was in the said meeting resolved and according to such resolution a Samaj

to be called the Bombay Arya Samaj was established and in order to carry out the business and objects of such Samaj a Committee of management consisting of certain members was appointed and whereas a furtherance of the object aforesaid the Samaj from time to time shall raise and receive subscriptions and donations and whereas by an Indenture bearing date the twenty eighth day of February one thousand eight hundred and eightytwo and make between Gopaldass Karamsi of the one part and the trustees of the other part in consideration of the sum of Rupees six thousand and four hundred paid by the Trustees to the said Gopal dass Karamsi out of the aforesaid subscriptions and donations the said Gopaldas Karamsi granted to the present trustees or the trustees that might be appointed as such in lieu of them in the event of his or their trustship or trustships in the event of Samaj proving him or them unfit to carry out the Trust or in the event of his (death) or their death all that piece or parcel of land or ground with the hereditaments standing thereon situate at Kakadwady in the Sub District of Mandavie outside the Fort of Bombay

and registered by the Collector of land Revenue, under Nos. 232 (Torn portion) and 1741 (New) and assessed by the Municipal Commissioner Nos. 2 and 3 containing by admeasurement nine hundred and eighty nine square yards be the same little more or less as rounded as follows. That is to say on or towards the East by the property of Bhaidas Kakidas Nager or towards the west by the public Road and called Kakadwade Street on or towards the (South by the property) North by the Girgaum police Court and on or towards the South by the Property of Swami Ramang Acharia and Poorman achraia and which were formerly and are now occupied by the said Gokuldas Karamsi with their apportionances to hold the same unto and to the use of the Trustees their successors and assigns on behalf of the Samaj for ever and whereas the parties hereto are desirous that la declaration of Trust should be executed which the Trustees have consented to do on manner hereinafter appearing. Now this Indenture witnesseth that in pursuance of the agreement and in consideration of the premises the Trustees do and each

of them doth hereby declare that the Trustees their successors or assigns shall stand and be seized and possessed of and entrusted in the hereditaments and premises hereinbefore described for and on behalf of the Samaj upon the Trusts and subject to the powers and provisions declared of a concerning the same in the aforesaid resolutions and the rules which are now or may at any time hereafter be passed by the Samaj in accordance with the existing or any future rules made or to be made for the conduct of the business of the Samaj. They also declare that the Trustees shall not on any account raise money on the said premises and that they shall manage the Trust according to the majority of opininos of the Samaj and in conformity with the object of the Samaj and each of the said Trustees doth here by for himself his heirs executors and administrators conversant with the members of the Samaj that they the Trustees have not at any time done or knowingly suffered or been party or privy to ach ach deed matter or thing wherby they or any of them have or has been prevented from executing these pre-

sents. In witness whereof the said parties to these presents hereunto have set their hands and seals the day and year first above written.

Signed Sealed and delivered by the said

Sd/- Gopalrao Hari Deshmukh (*Seal*)

Sd/- Sewaklal Kursondas (*Seal*)

Sd/- Soonderdas Dharamshi (in Gujarati) (*Seal*)

Sd/- Jeewandas Mooljee (*Seal*)

Sd/- P. (Torn Portion) Kaliandas (*Seal*)

Compared by

Sd/-

True Copy.

The words and on line 22 page 241 merchant in line page 243 col. 2 death in him 18 page 244 & in line 5, South by the property in lines 5 & 6 page 245 having been written by mistake at the time of copying have been placed in brackets. The word one in line 3 page 242 having been erroneously written at the time of copying has been placed in brackets & of written above in red ink. The words & letters "pundit" line 4 page 242 little in line 2 in line 15 column 2 page 245 having been omitted at

the time of copying have been written above in red ink.

Sd/- A Trimback

Sub-Registrar of Bombay.

Copied by Sd/-
Read
Compared by Sd-

True Copy

No. of corrections 9 (Nine) Nos. (1, 2, 5, 7, & 8) Erasures and Nos. (3, 4, 6 & 9) Alterations.

Sd/-

Sub-Registrar of Bombay.

(SEAL)

Printed at Janta Press, Bulandshahr. 1000/3/75

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 511
दयानन्द महिला महाविद्यालय

प्रतिज्ञायें

१. ईश्वर, वेद, सदाचार आर्ष साहित्य, आर्य भाषा आर्य संस्कृति और आर्य परम्पराओं में निष्ठावान हम सब "आर्य राष्ट्र" में दृढ़ निष्ठा रखते हैं।

२. ईश्वरनिष्ठ, धर्मात्मा, सदाचारी, शूरवीर और न्याय परायण आर्यों का राज्य स्थापित करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है। हम इसके लिये हर सम्भव प्रयत्न करेंगे।

(इन दोनों प्रतिज्ञाओं को मुद्रित करा जन प्रचारार्थ वितरित करना प्रत्येक आर्य का पावन कर्त्तव्य है)

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ द्वारा लिखित महत्वपूर्ण ग्रन्थ।

१. वेदानुसार वास्तविक सृष्टि सम्वत् (समाप्त)
२. आर्ष योगोपनिषद् (समाप्त)
३. योगानुक्रमणिका (समाप्त)
४. गायत्री विवेक ०-६०
५. आदिम सत्यार्थ प्रकाश के महत्वपूर्ण संस्मरण। २-५०
६. योगामृत ०—३०

प्राप्ति स्थान:- आर्ष योग विद्यापीठ, धर्म संस्थान आनन्द निकेतन, खरखौदा, मेरठ (उ० प्र०)